अमर गोपीचन्द योगी

कुमाऊनी भाषा में

प्रथम भाग

लेखक सम्पादक

कुवरसिंह मनराल

सुपुत्र स्वर्गीय आनसिंह मनराल

बसेड़ी पला नया अल्मोड़ा यू० पी०

मुख्य प्राप्ती स्थान

कुमाऊ साहित्य सदन

सीताराम बाजार दिल्ली ६

प्रथम संसकर्ण २००० प्रतियां सन् १९६९ मू०

सर्वाधिकार सूरक्षित है

नोट—'अमर गोपीचन्द योगी से आगे की कहानी दूसरे भाग में छपेगा

मु०— सुमन कम्पोजिंग एजन्सी द्वारा प्रकाशित

लाल दरवाजा, बाजार सीताराम दिल्ली ६।

क धामा

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक अमर गोपीचन्द योगी नाम कुमाउनी भाषा में आपके हाथों में विराजमान है। यह जगत विदित है कि राजा गोपीचन्द दसवें सदी के दरम्यान में धारा नगर के राजा थे और उनके पिता का नाम पदमचन्द व माता का नाम मैनावती था। राजा गोपीचन्द की कहानी हर बच्चे-बच्चे को मालूम है। साधू लोग भी एकतारे में भजन गाकर सुनाते हैं। बताया जाता है कि गोपीचन्द की सोलह सौ रानियाँ तथा सात सौ पुत्रियाँ थीं और उनके खानदान में यह भी बताया जाता है कि ठीक जवानी में मृत्यु हो जाती थी जिसमें इसी प्रकार पदमचन्द के मरने पर गोपीचन्द ने राजगद्दी सम्भाली। और माता को इस खानदान का स्मरण पर दुःख हुआ तथा अपने पुत्र गोपीचन्द को राज छुड़ाकर सन्यास दिलाने को बाध्य किया। जिससे मां के कहानुसार गोपीचन्द ने गुरु की शरण में जाकर उपदेश लिया मगर मन्त्री की बातों पर आने से गुरु को कुवे में फेंक दिया जिससे माता को पता लगने पर दुःख हुआ और गोपीचन्द के बचाव के लिए दो नाथों को आमन्त्रित किया जिसमें मुख्य सचीव गोरखनाथ व कानिपानाथ थे मैनावती ने हाल गोरखनाथ को सुनाया आपसी तकरार से गोरख ने कुवे में जाकर मन्त्र मार दिया और अपने आप अपने गुरु लेने संगलदीप में रासधारियों के साथ गया जिसमें गोरख नाथ ने कुछ ऐसे तत्तों को किया जो आज तक भी वचन बध व साबीत है और गोरखनाथ अपने गुरू को धारा नगर के भंडार में ले आया मगर कानिपा अपने गुरू को न निकाल पार [illegible] को अमर करने के लिए कुवे को छिय

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक अमर गोपीचन्द योगी नाम कुमाउनी भाषा में आपके हाथों में विराजमान है। यह जगत विदित है कि राजा गोपीचन्द दसवें सदी के दरम्यान में धारा नगर के राजा थे और उनके पिता का नाम पदमचन्द व माता का नाम मैनावती था। राजा गोपीचन्द की कहानी हर बच्चे-बच्चे को मालूम है। साधू लोग भी एकतारे में भजन गाकर सुनाते हैं। बताया जाता है कि गोपीचन्द की सोलह सौ रानियाँ तथा सात सौ पुत्रियाँ थीं और उनके खानदान में यह भी बताया जाता है कि ठीक जवानी में मृत्यु हो जाती थी जिसमें इसी प्रकार पदमचन्द के मरने पर गोपीचन्द ने राजगद्दी सम्भाली। और माता को इस खानदान का स्मरण पर दुःख हुआ तथा अपने पुत्र गोपीचन्द को राज छुड़ाकर सन्यास दिलाने को बाध्य किया। जिससे मां के कहानुसार गोपीचन्द ने गुरु की शरण में जाकर उपदेश लिया मगर मन्त्री की बातों पर आने से गुरु को कुवे में फेंक दिया जिससे माता को पता लगने पर दुःख हुआ और गोपीचन्द के बचाव के लिए नौ नाथों को आमन्त्रित किया जिसमें मुख्य सचीव गोरखनाथ व कानिपानाथ थे मैनावती ने हाल गोरखनाथ को सुनाया आपसी तकरार से गोरख ने कुवे में जाकर मन्त्र मार दिया और अपने आप अपने गुरु लेने संगलदीप में रासधारियों के साथ गया जिसमें गोरख नाथ ने कुछ ऐसे तत्तों को किया जो आज तक भी वचन बध व साबीत है और गोरखनाथ अपने गुरू को धारा नगर के भंडार में ले आया मगर कानिपा अपने गुरू को न निकाल पाए [illegible] को अमर करने के लिए कुवे को लिय

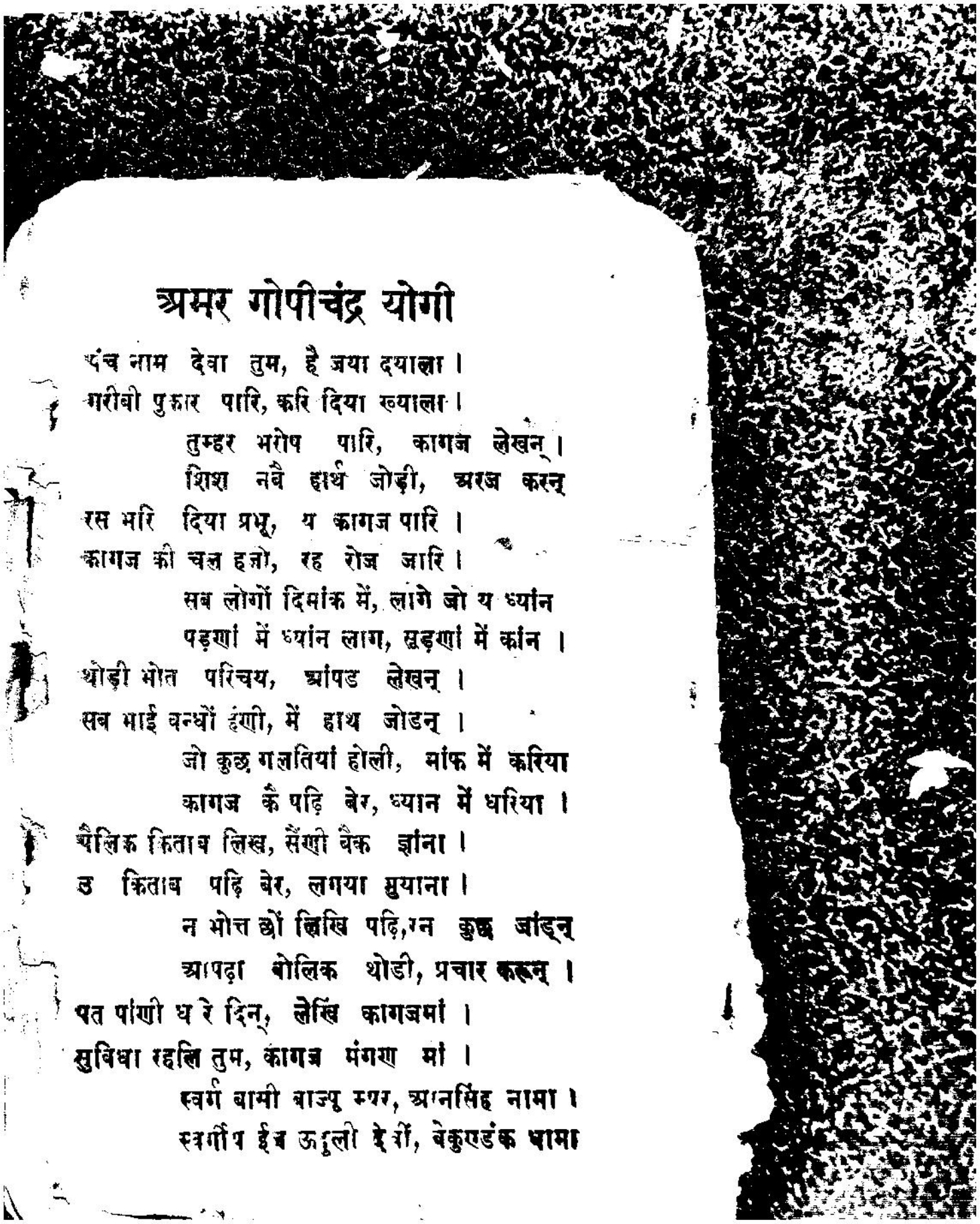

अमर गोपीचंद्र योगी

पंच नाम देवा तुम, है जया दयाला ।
गरीबी पुकार पारि, करि दिया ख्याला ।
तुम्हर भरोष पारि, कागज लेखन् ।
शिश नबै हाथ जोड़ी, अरज करन्
रस भरि दिया प्रभु, य कागज पारि ।
कागज की चल हलो, रह रोज जारि ।
सब लोगों दिमाक में, लागे जो य ध्यांन
पढ़णां में ध्यांन लाग, सुणणां में कांन ।
थोड़ी भोत परिचय, आपड लेखन् ।
सब भाई बन्धों हंणी, में हाथ जोडन् ।
जो कुछ गलतियां होली, मांफ में करिया
कागज कैं पढ़ि बेर, ध्यान में धरिया ।
बैलिक किताब लिख, सैंणी बैक ज्ञांना ।
उ किताब पढ़ि बेर, लगया सुयाना ।
न भोत छों लिखि पढ़ि, न कुछ जांड्न्
आपढ़ा बोलिक थोडी, प्रचार करून् ।
पत पांणी घ रे दिन्, लेखि कागजमां ।
सुविधा रहलि तुम, कागज मंगण मां ।
स्वर्ग बासी बाज्यू म्यर, आनसिंह नामा ।
स्वर्गीय ईज ऊदुली देवीं, बेकुण्डक धामा

अमर गोपीचंद्र योगी

पंच नाम देवा तुम, है जया दयाला ।
गरीबो पुकार पारि, करि दिया ख्याला ।
तुम्हर भरोष पारि, कागज लेखन् ।
शिश नबै हार्थ जोड़ी, अरज करन्
रस भरि दिया प्रभू, य कागज पारि ।
कागज की चल हजो, रह रोज जारि ।
सब लोगों दिमाक में, लागे जो य ध्यान
पढ़णां में ध्यान लाग, सुढ़णां में कांन ।
थोड़ी भोत परिचय, आंपड लेखन् ।
सब भाई बन्धों हंणी, में हाथ जोडन् ।
जो कुछ गलतियां होली, मांफ में करिया
कागज कै पढ़ि बेर, ध्यान में धरिया ।
पैलिक किताब लिख, सैंणी बैंक ज्ञांना ।
उ किताब पढ़ि बेर, लगया भुयाना ।
न भोत्त छों लिखि पढ़ि, न कुछ जांड्न्
आपढ़ा बोलिक थोडी, प्रचार करन् ।
पत पांणी धरे दिन्, लेखिं कागजमां ।
सुविधा रहलि तुम, कागज मंगण मां ।
स्वर्ग बासी बाज्यु म्यर, आनसिंह नामा ।
स्वर्गीय ईज ऊदुलो देवीं, बेकुण्डक धामा

बसेडी ग्राम म्यार, पट्टी पल्ला नया ।
कुंवर छ नाम म्यरा याद करने रया ।
सब भाई बन्धों हंणीं हात है जोणीया
किताब छपडां कारों जरुरै पढ़िया
तुम लोग सहयोग रोज में मिलल
लेखक कुंवर रय कागज छापल
य किताब पढ़ि लिया ध्यान धरि बेरा
किताब पढ़ण होच समभणक फेरा
राजा गोपी चन्द बात लेग्नि कागज मा
पढ़ि बेर रटि लिया आपडा मनमाँ
पैलि कुछ सुणी होलि, बाता छ पुराणी
समझिया आज सब बोली में आपणी
ऐतु हे . आधी न अब पूरि सुणों बाता
गोपीचन्द की लेखीकरैछा ईमीज कहत्ता
कम कम रज हया बड बल कारी
ऐचि को बैठिया रय सब की ऐ वारी
गौड़ बंगालय रया गोपीचन्द रजा
लोक और गुरु भर अमर हैं आजा
गोपीचन्द नाम दान राज वन्सी रय
गौड़ बंगालय खुब नाम चलें गोय
मैल भौ रागियाँ हया मान सों चेलिया
भोला गढ़ नगर में सब छौ खेलिया
सब चिज पूर छिया कमो एक भारी
स्यलोक जनम निछि काकी कोख पारी

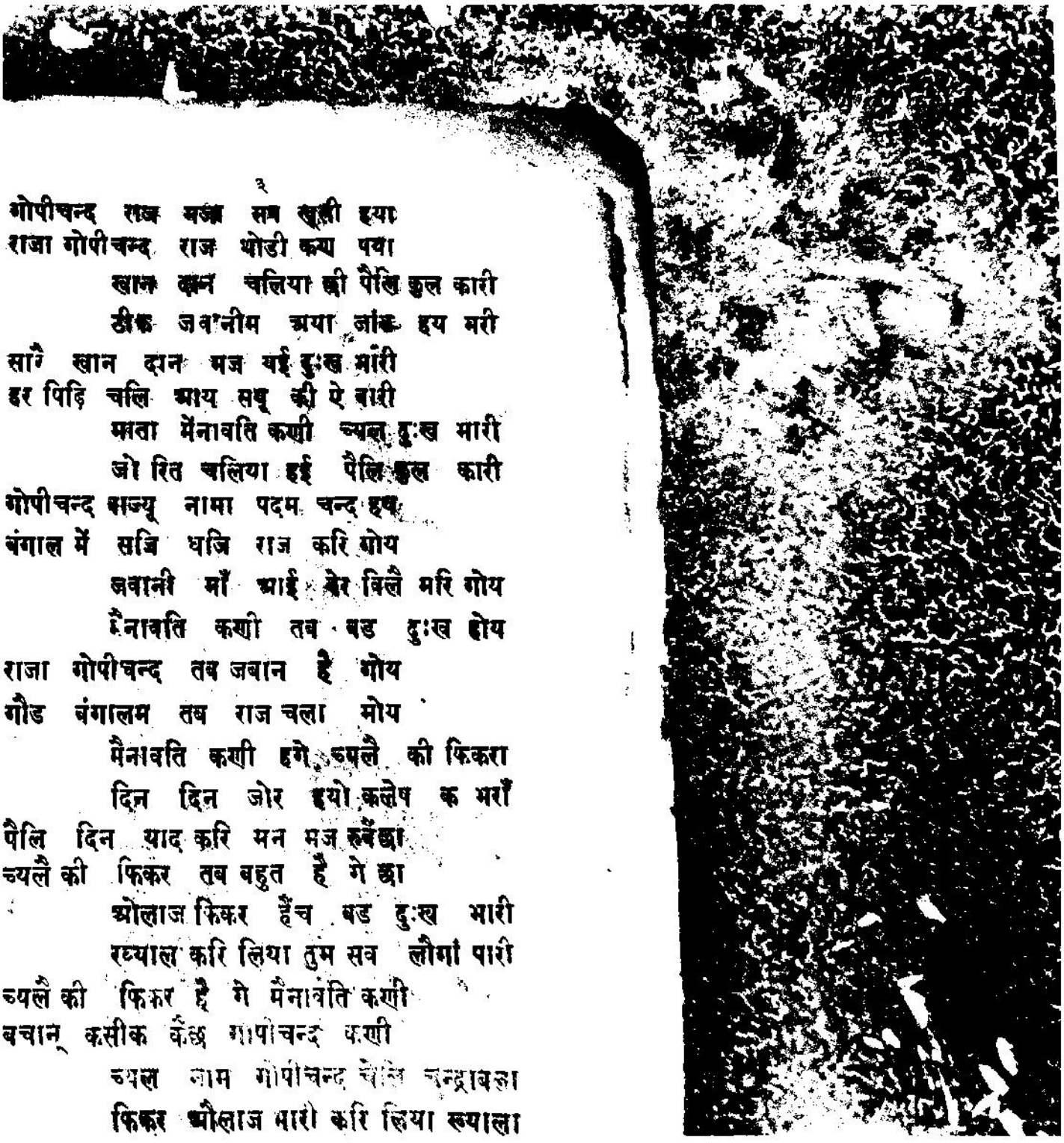

गोपीचन्द राज मजा सब खुशी हया
राजा गोपीचन्द राज थोडी कया पया
खान दान चलिया की पैलि कुल कारी
ठीक जवानीम अया जोक हय मरी
सागे खान दान मज यई दुःख भारी
हर पिढ़ि चलि आय सबू की ऐ बारी
माता मैनावति कणी च्यल दुःख भारी
जो रित चलिया हई पैलि कुल कारी
गोपीचन्द बाज्यू नामा पदम चन्द हय
बंगाल में सजि धजि राज करि गोय
जवानी माँ आई बेर बिलै मरि गोय
मैनावति कणी तब बड दुःख होय
राजा गोपीचन्द तब जबान है गोय
गौड बंगालम तब राज चला मोय
मैनावति कणी हगे च्यलै की फिकरा
दिन दिन जोर हयो कलेष क भराँ
पैलि दिन याद करि मन मज रूँछा
च्यलै की फिकर तब बहुत है गे छा
औलाज फिकर हैंच बड दुःख भारी
ख्याल करि लिया तुम सब लोगो पारी
च्यलै की फिकर है गे मैनावति कणी
बचान् कसीक कैछ गोपीचन्द कणी
च्यल नाम गोपीचन्द चेलि चन्द्रावला
फिकर औलाज भारी करि लिया ख्याला

च्यलैकी फिकर कैछ, रात दिन भारी
फिकर में बैठी रछी, स्यामी ऐकदरी
होन हार होई रैछै, हई वे जरुरा
सबू कूँ ठुल होंछ, आखीर तकदीरा
अब सुणी लियो तुम, पुरी बात सारी
कैसी कैसी बीती आई, मैनावती पारी
राजा गोपीचन्द, हय, बैठी रंगबासा
रतन कुवरि हई, पटरानी खासा
नौ हुणी गो गोपीचन्द, रातीया टैमा
आंग पारी वस्त्र खोली, बैठिबै ठेलमा
मथ माता मैनावति, बैठी झरोकिमा
च्यलै की फिकर पारी, वियोगी आखोंमा
पड़ी मे नजर अब, गोपीचन्द पारी
बैठी रैछी मैनावति, खोली बे मोहोरी
मैनावती हूबी, रैछ च्यलै गम पारी
सुरज क तब हय, गोपीचंद पारी
राज वन्सी च्यल हय, देखड चाहांड़
माता कणी भारी गम, च्यलक आंपड़
पैलि दिन याद कैछ, आंसु आई जानी
गम भरी आंसू तब, च्यलैं में पड़नी
आंखों पारी आँसू पढ़, गोपीचद पारी
बारी सकी बुद कोछ, कां बै ऐ मिपारी
आम मान साफ हैर, लागी न बादल
नि खानि साफ हया, कथैं निछ हौल

फिकर में पड़ि गोय, मन में बिचारा
गोपीचन्द देखों तब, ओती बार पारा
तब आय दौणी बेर, खास वां नौकर
सुडों रज्यू बात कुछ, तुम न फिकर
माता मैंनावती रजा, रूश पाले हई
मोहरिक द्वार थामी, ठाडी हई रई
गोपीचन्द देखों जब, माता क जो हाल
दोणी बेर माता पास, जांछ ततकाल
अहेडि क पास जाई, आँसों जो पोछोंबा
मकड़ी बचौदे ईजा, क्या बात है कूछा
आँसों किलै अय ईजा, त्यर आंखों पारी
त्यर रुण देखी ईजा, फिकर में भारी
के बातक दुःख हय, तु बता मकड़ी
कि दी ईजा गाई कालै, च्यलैकी तिकड़ी
या रिसैल ब्वारी, तेरी की रिसैं नीनिड़ी
ज्यक तिकै दुःख ईजा, तु बता मकड़ी
जस तु कराली ईजा, मैं तिस करुला
दुःखनि बतालि ईजा, में कसी बबूला
के बात की कमी हई, पुर में करुला
तु दःख में रई ईजा, मैं सुख कौं पोंला
तब मैंनवति धरि, च्यल सिर हाता
कान खोली सुड च्यला जो मैं कौनू बाता
दुःख हय भारी च्यला, सुड ले कहता
पैलि बैतिचलि आय, कुल कारी बाता

त्यार राज्यू छिया च्यला, त्यर क शरीरा
सुरज क तप छिया वड रंग धीरा
सारै बंगालम च्यला, चलाछ हुकमाँ
जवान मैं मरि, गया कलेश मनमा
एई च्यलि आय च्यला, सब खान दाना
खारुडाँ की डेर च्यला, आखीर में निदाना
यई छा फिकर च्यला, तेरिलै भकणी
मानि जये बात मेरि, अरज लिहणी
छाड च्यला राज पाट, बनिजा फकीरा
सतों की संगत कर, जो पिरोंक पीरा
मरड है छुटी जाल, शरीर आंखीरा
जगत में हई जाल, अमर शरीरा
तब कोछ गोपी चंद, ईजा मेरि सुणा
य कलेश मन धरि, किलै हय रुणा
काल बीत चलि आय, सब एक सारा
ईश्वर की माया हई, अपरम लै पारा
जो लिछ जनम ईजा, मरल जरुरा
पुरांडी वातों में ईजा, क्या लिड़ी फिकरा
कस कसा रज मरा व गंधर्व सेना
विक्रमा दित्य ममा मर एक दिना
अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेवा
युधिस्टर सिसुपाल मरि गया सबा
जगत में कोछ ईजा, आज लै अमरा
अमरक टिक ईजा, लागछा कपरा

तब कैछ मैंनावति, सुण च्यला बाता
अमर छै साधू मेष, जालनधर दत्ता
राज पाठ छोड़ी बेर, साधू बनि गया
सुखदेव भगीरथ व, अमर है गया
दोहा—मैंनावति गोपीचन्द को
बेटा जी बालेपन में तज गऐ, धुरु जी भगत धरध्यान
ब्रह्मपुरी में जा किया, गगन अटल अस्थान
मैंनावति समजैछा तब च्यलै कणी
अमर पुरुष नात लगैछू कहाणी
गोपीचंद मैंनावति को
दोहा—माताजी ना कुछ देखा जगतमें, ना चाखा रस भोग।
ना विलसी धन लक्ष्मी, ना सलतनत संयोग।
ना मुल्क पाल मै दुश्मन किया, नहीं जगत मैंतख्त बिठाया।
नही जुगराज किया कुछमैने, और ना कुछ सुख पाया।
माता जी ना कार्य किया कुछ मैंने, औरन धाकजमाई।
बार बरस तक और मुझे तुम, राज और करने दो माई।
च्यलै बात मैंनावति, एक नि माननि।
राज हठ त्रिया हठ, एक जस हनि।
मैंनावति समझैछा, गोपीचंद कणी।
जनम सुफल करा, साधू सेवा हंणी।
तब कुछ गोपीचन्द, सुणा ईजा बाता।
कसीक छोड़ुल ईजा, अब त्यर साता।
ईतन छा राज पाठ, और घर बारा।
क्या धरि रहछ ईजा, साधू भेष पारा।

तहाँ जै- घर में-ईजा, मंन्दीरा बनूला ।
अड़सठ तीरथ धाम, घर में करुला ।
किहुडी करीछा ईजा, साधू क चकरा ।
क्या जस है जाल ईजा, साधू हई बेरा ।
मैंनावति गोपीचंद को

दोहा—बेटा जी बिना हटाये ना हटे, काल चक्रकी चौट ।
जो बचना चाहे उस गजबसे, तो ले सतगुरु की ओट ।
छोड चयला राज पाठ, साधू सेवा कर
सेवा मजि मेवा पालै, हई वै अमर ।
पथरों की पूजा करी, क्या फल मिलिला ।
हंसी करि भगवानों की, नराज है जैला ।
गोपीचंद का मैंनावति को

दो०-माताजी जिसकी दिव्य तकदीरहों, मिले छत्र और योग
जो नर बिना नसीब का हो, वह साधन है तब जोग
भर पेट कहीं कुछ मिलता नहीं, तब आगे हाथ पसारत है
पेट की भुक मिटाने कों सब, रुप जोगी का धारत है ।
घर घर जाई बेर, अलख जगानी ।
घर मज लोगों कणी, तंग लै करनी ।
गेरुवा कपड़ पैरि, ढौंगी साधू हंनीं ।
साधू मेष धीर बेर, किर्तन कै जानी ।
लोगों कणीं ठगी २, ये सीक खैंजनि ।
सोल कितमक ईजा, भेष यों धरनि ।
मंकडी ना भेजईजा, ईन साधू पछिना ।
दिन भुख हरै ज ाली, रातै जाली निना ।

ईथा उ था मेरि ईजा, देखिया नम्बर।
घर घर पर ईजा, का लगौंला भ्रमर।
हर घर भिक ईजा, कसी मैं मांगौंला।
साधु लोगों साथ-सब, भि कसीका रियोंला
सुन क पलंग छोडी, कसीक वां रहौंला।
तुम छोडी बेर ईजा, एकलै का रौंला
ईतन छा राज पाठ, का कणी सौंपोंला
य ऐस आराम छोडी, दुःख कसी सौंला

मैंनावती

दोहा—बेटा जोगी जुग-जुग करते हैं बारह जुगका राज
अमरा पूर त्रिलोक मैं चतुर सखी के ताज
एक जोग साधे दुजे राम भजन तिजे काया
कर ज्ञांन क्रोध लोभ मोह ममता पाँचों इन्द्रिया मारत हैं
अब तो बेटा तजो अमीरी, राज छोड अब करो फकीरी
गुरु उपदेश गुण करो जरूरी, पापबदन सबतर बानिसतारी
माता बात गोपीचन्द, मानिजा आँखीरा
कति रनि साधु ईजा, कति रनि पीरा
कया हंणी बाट जाँछ, को इ लाक गैनि।
संत महंतोंके ईजा, रंयो कसि लगानि
पुर पत बता ईजा, लागी जानू बटा
कोल तेरि पुरि हलि, निभि जाली हटा
मैंनाबती च्यलै कथी, बाठ लै बतैंछा
हर बात सोचि बेर, सब समझैं

स्थर बंगालम च्यला, बागक कितरा
तप मज बैंठि हया, गुरु जालनधरा
गुरुक आधीन जाई, चरन छुड़िये
जल फुल पाती तुत. आधीन धरिये
चरणों में सिर भूकै, बनि वै लाचार
गुरुक आधीन च्यला, करिये पुकार
गुरु जी पुछिला जब, बतै दिये हाला
जो दिला उपदेश गुरु करि लिये ख्याला
य त्यर बचन ईजा, मानि हाच सब
साधु हण लिजि ईजा, जाड मय अब
सभाल तु राजे पाठ, सार बाग डोर
ध्यान में धरिये ईजा, मेरि प्रजा और
अब छोडी हाच ईजा, राज बंगालक
बैंराग ह मोय ईजा, य त्यर बातों का
बट लाग गोपीचंद, गुरु पासा जांछा
गुरु पास जई, बेरा आदेश करूछा
गोपीचन्द फुल लेई, लगांछ चौफेरा
देखि लिया गुरु जिलैं, आंख खोली बेरा
गुरु जी पुछमि अब गोपीचन्द हांति
क्या काम आई आ बेटा काम क्या छ येति
कति त्यर घर हय क्याछा त्यर नामा
क्या नाम छा ईज वाज्यू का करनि कामा

गोपीचन्द

दोहा—गुरु जी पदम सैन का पुत्र हूँ, गौड़ बंगला है ग्राम
मैं नृप हूँ ईस नगरी का, गोपी चन्द है नाम

ईस हर्ख मन को समझाता हूँ, रहता नहीं दिल अमीरी
आखीर को त्यागना हुई, अब दिल लगा फकीरी में
गोपी चन्द हाति अब, गुरू जी पुछनि
कयक दुःख आय बेटा, क्या है गोछ कानि
क्या धीर रहच बेटा, फकीरी भेषमाँ
बड भारी दुःख हय, साधू
फकीरी भेषमां बेटा, अलख जगानि
नग खुट घर घर, माँगौ हंणी जानि
जमीन में सिंड हय, छाल बिछे बेरा
साधु की जिन्दगी बेटा, बहूत कठोरा
त्यर कैं नि हल सब, ये तुक साधन
किहूंही करछे बेटा, आफत्त में ज्यान
रज नि मानन सब, सास तरै की बाता
आर्डर चलणी हय, जनताक साता
न साधू संगत करि, नत कर ध्यान
अर्थ न छाँनडन आन, उपदेश ग्यान
राज कुमार बेटा, बाड तेरि सान
प्रजा करीछ ज्याकी, बड सन मान
बड खान दान त्यर, घर का अमीरा
मान मेरी बात बेटा, न बन फकीरा
नानी छा उमर आजी, थोडा छछ ग्यान
किलैकि धरछैं बेटा, तु जोगीक ध्यान
सोल सौ रामियां त्यर, सात सो चेलियाँ
माता प्यारी मैंनावती, जाक छैं सैंतियां

भाई व बहिन त्यर, स्वर बिरादरा
कसीक छोडले बेटा, सबुक य प्यारा
ऐ तुक छा फौज तेरी, तोफ माल खान
अन धन गोदाम भरि, पुर छा सामान
के बातकि कमि निहै, सब भर पुरा
राज तू न छोड बेटा, जवानि अधुरा
सौल सौ राणियों त्यर, पाप बड़ भारि
कसीक छोडलैं बेटा, माया सबू पारि
मैंनावति त्यर बिना, कसीक रहलि
दस मैंण बोकी बेर, ते कसी छोडलि
प्यार कि बहन तेरि, कसीक भानलि
ते जसी सकल भाई, काकणी देखलि
मान बेटा बात मेरि, कर कुछ ख्याला
कसीक छोडलैं सब, माया जन जाला
साधु की जिन्दगी हई, बहुत कठोर
सबू माया छोडी बेर, रनि एक ओर
तू कसी रहलैं बेटा, येतुक दुःखमां
कुछ ख्याल कर अब, आपडा मनमा
अमीर घरक हये, दुःख में का रलैं
पलंग में सिडिया तु, जमीनमा स्यलैं
सबु कणी तु दिणिया, तु कसी माँगलैं
पेटक खातिर बेटा, दर दर फिरलैं
नंग खुट दर दर, अलख जगालैं
रूट नि मिलल जब, भुकैं कसी स्यैलैं

गृहस्ती में जो आराम छा, उस निछ कति
क्या हगेछ हट बेटा, क्या बिगड़ी मति
कतु समझानि गुरु, गोपीचन्द कणी
गोपीचन्द सुरि हग, साधू बंन हंणी
गुरु कणी समझाछ, गोपीचन्द हाला।
साधू मैं बना ओ गुरु, म्यर करि ख्याला,
न बचे म्यर भाई गुरु, न छैं बिरादरा
न माया मिपारि कांकि, न मेरि कपरा
आनि जानि माया छा य, दि दिनक मेला
येति छुटी बेर सब, फिर कां मिलिल
झुटी माया मोह करि, बचण चहानू,
उपदेश दियो गुरु, फकीर है जानू
ईजा छिया प्यारि मेरि, उनिक यों हाला
ओर को आपण गुरु, तुम करो ख्याला
मेरि केकि कछां गुरु, ईतनि फिकरा
उपदेश दियो गुरु, ध्यान धरि बेरा
जस तुम कला गुरु, पालन करुला
उपदेश ग्यान सब, ध्यान में धरुला
साधू लोग हनि सब, बड बड संन्यासी
तुम्हर चरेणां गुरु, में रहोंल दासी
गुरु जालनधर अब, दया में आजानी
गोपीचंद कणी जब, उपदेश दिनी
दोहा मजि गुरुतब, उपदेश बतानी
सुडि लिये गोपीचन्द, कान खोली कनी

गुरु जालनधर का उपदेश

दोहा—बेटा जी मार्ग चाहे जो योग का, पांच पकडले भूत
पच्चीस पकडलो भूतिनी, तीस मार आदभूत
मन मारे तन मारे मारे शकल शरीर।
चारों ईन्द्रीया वस में करे, तब होये फकीर।
गौ वच्छा हत के शास्त्र से सत साध काट ब्रहम मारो
सत कर्म सन्तोष सबर सच, नियम नेम अपना मारो
उपदेश गोपीचंद, ध्यान लै सुणीछा
अर्थ ज्ञान विन गुरु घर कौला कौंछा
घर जाई बरे गुरु, कचहरी बिठौंला
मंत्री कंणी बतै बेर, अर्थ समझौंला
लिबै गुरु आसीरवाद, घर आई गोय
कचहरी बिठाई बेर, मंत्री हौती कोय
बड बड पंडित बुला, जो जोतषी गयान
दोहा अर्थ खोलड में, मन लाग ध्यांन
ठडी बेर गोपीचंद, दोहा लै पढ्छा
ज्ञान भीन करि बरे, मैं समझाओ कुछा
ठुल ठुल पंडितोंकै, मंत्रि जो बुलाछा
रज बछा दोहा कनि, अर्थ छ,नो कुछा
एक दिन टैम और, पंडित मांगनी
आपड आपड गयान, करीब लगानी
तब कौंछ गोपीचन्द, गुड ज्ञान खोली
साधू बन आडर छा, माता की जो बोलो

सब सोची समझी वै, अर्थ में बतया
आठ बजे भोल राती, हांजर हैं जया
गोपीचन्द कणी अब, सब समझानी
यो बात पछिन रजा, क्या पढ़छा कनौं
कतू जग डेहोंगी साधू, फिरनि ईपना
साधू भेष पारी अब, न बिगाओ दिना
गोपीचन्द एक बात, काकी नि मानन
स्वप्नों में गुरु कणी, हैं गेछ देखन
सब लोग जम हई लगानि, बिचारा
सोच मजि बैठी सब, करनि फिकरा
रज हल साधू कनि, हम कै क्या कौंला
बिन रजै राज कंणी, कसीक चलौंला
पंडितों है केग कनि, करी वै बिचार
उल्ट अर्थ निकालो या, सोची अनुसारा
तब कनि पंडित ज्यू, साधू क बचना
कसीक खंडन करु, सही छु लगना
मातामैनावीत की छु, सब कर्मांत
तब रज कंण लाग, साधू लोगों सांत
करम में रजक छा, साधू लैंब
साधूक बचन कणी, कसीक टालड़
मंत्री कणी गुस्स आगे, पंडितों बातमां
पंडित रहनि कौंछ, उल्ट जो कानमां
रज कै बताओ कनि, जब उल्ट ज्यांन
जसीक हलट कनि, रजक लै ध्यांन

बैठी गे कचहरी तब, दुसरा दिनया
उल्ट अर्थ समझानि, रज क मनमां
साधूक उपदेश रया, खराब-छू भारी
ब्रह्म हत्या करि बेर, मार मंहतारी
कुटम्ब कैं मारी बेर, कर बराबरा
साधू तब हलै कौंछ, येतु सादी बेरा
य अर्थ बिकल रजा, साधू उपदेश मां
बुर हजो उ साधूक, क्या ठानि मनमा
गोपीचन्द गुरु आयो, गुरु उपदेशमा
बात बसी गोय तब, रज क मनमां
बुरी दस ऐंछ जब, बुर बसों ज्ञाना
हर भलि बात पर, पलटि जां ध्यान
कभें नि बताण भाई, कैंकै बूर ज्ञान
भलि बात भल काम, ईभजि ह सान
मंत्री की जो बात पर, रज आई गोय
ना समझ हई बेर, बुर मानि गोय
साधु कणो मारो कौंछ, सिपाही हातों लै
साधु पास जाई बेर, मारि दी लातोंलै
उठै बेर गुरु कणी, कुबा दवै लिया
मथ बति छिद खेलि, साधू दवै दिया
साधु कणी कुब दवै, घर आई गया
राजा गोपीचन्द तब, रण वास गया
फिकर मनमें हई, रहौंच सोचमा
ग धारि हुबी रछ, बैठी महल मां

मैनावती कणी हुई, च्यलकी फिकरा ।
क्या हय हनल कैछ, उपदेश परा ।
सिपाही जो भेजि हाच, तब रनवासा ।
गोपीचन्द बुलै बेर, ल्याओ म्यर पासा ।
गोपीचंद आई गोय, महेडी क पासा ।
फिकर मन में धरि, लम्बी लियुंछ सांसा ।
मैनावति पुछी तब, वात च्यलै हांती ।
सुन सान किलै च्यला, क्या ह गुरु ओती ।
गुरु लै क्या कौछ च्यला, तु बता भंकडी ।
उपदेश ज्ञान च्यला, हौच ना तिकडी ।
गोपीचंद तबकुछ, सुड ईजा वाता ।
में किलैकी भेज ल्युल, उ साधूक सांता ।
उपदेशा दिया ईजा, उ डों गी साधू लै ।
भोत बुर लाग ईजा, त्रिक उपदेश लै ।
गुरु उपदेश दिया, माता कैं समझांछा ।
में ओती नि जांछी ईजा, ल्युल भेज कौछा ।
दोहा—पचीस पकड़ ले भुतनी, पांच पकड़ ले भूत ।
सीस समुन्द्र में डारो, तीस मार अदभूत ।
गुरु उपदेश सब, माता बतै दिया ।
आपड साधूक ईजा, तारिफ कछिया ।
उपदेश अर्थ ईजा, पंत्री लै समझाय ।
भोत लाग बूर ईजा, गुस्सा आंण मोय ।
सबू कणी कचहरीमां, य दोहा सुणाय ।
सुडा बेर सबुल वां, मुख फरकाय ।

मंत्री है निकाज कोय, गुरु दोहा अर्थ
साधू उपदेश अर्थ, निकल बा व्यर्थ।
सन्यासी कैं मार कोय, ब्रह्म हत्या कर।
माता कणी मारी बेर, जोगी भेष धर।
काम क्रोध अहंकार, सब छोडी धर।
अर्थ सुणी बेर ईजा, चडी गो जहर।
गुरु उपदेश अर्थ, माता समझैंछा।
सुण च्यला ध्यान धरि, अर्थ सुण कैंछा।
पांच भुत हया च्यला, पांचों ईन्द्रीया।
पचीस में पांच जोडी, पुर तीस हया।
पचिस भुतनि च्यला, किरित नारियां
सब मन बस करि, जो साधू हणियां।
साधू उपदेश च्यला, य अर्थ रहय।
त्यर मंत्री कणी अर्थ, कसिक निभाय।
समझीगो गोपीचन्द, महेणिक बाता।
मन मज संणा लाग, दुःखी हई गाता।
गोपीचंद मन मजि, फिकर करछा।
मैंनावति च्यलै हात, अजि जा वां कैंछा।
हंड बैठ गोपी चन्द, ईज कैं बताँछा।
कति जानू आजि ईजा, गुरु दबै हाछा।
गुरु कणी कुवा खेति, लीद भरि बेरा।
मंत्री अर्थ समझीवैं, है गोछा अघेरा।
मैंनावति सुडी बरे, विहोष है ऊँछा।
अब गोपीचन्द म्यर, कसी बचौं कैंछा।

कसी मिल सोची छिपा, कप हई गोय ।
सार खान दान पारि, दाग लागी गोय ।
मैंनावती कणी भोत, फिकर है रैछा ।
ओ लाज कि माया मोह, सब ऐसी हैं छा ।
गुरु जालनधर अब, सराप दुयों कैंछा ।
म्यर गोंपीचन्द अब, कसीक बचौछा ।
लेखी चिट्ठी मैंनावति, नौ नाथों जो हंणी ।
चपरासी मेजि हाल, चिट्ठी जो दि हंणी ।
गोपीचंद नाम पारि, रचिछा भंडारा ।
चिट्ठी पढ़ि तब ओति, गोरख हाथ पारा
गोरखज्यू तब ओति, बतानि अर्डरा ।
सब जो जमात हिटो, मैंनावती घरा ।
निमंत्रण आई हय, रचिछा मण्डार ।
सब जोग जमात वां, है गथा तैयारा ।
सब झंणां आई गया, बागक किनरा ।
कानिपा व गोरखा ज्यू, हेड सबू ठैरा ।
भंग जो धतूरा पिया, बहाल है रनि ।
अत्तर की दम लगै, कीर्तन करनि ।
हमर तरफ बै माता, आसीस तमहंणी ।
महलों में मैंनावती, भेंट जो लिएं छा ।
गोपीचंद सांथ ल्याई, हात लै जोणिछा ।
तब कनि गोरख ज्यू, मैंनावती हंणी ।
तब कैछू मैंनावती, सुडौ महाराजा ।
कान खोली सुडी लिया, य मेरी अरजा ।

चरनों की दासी छु मैं, करि दिया ख्याला ।
म्यर गोपीचंद परा, हैं जया दयाला ।
गौरख ज्यू तब कनि, सुण मैंनावती ।
क्या काम लिजिया तल, बुलैं स्य ऐती ।
क्या बातोंक दुःख हय, बतैदे मंकणी ।
की को आछ त्यर माई, गाज छीन हणी ।
मैंनावती हाथ धरि, ज्यलैं सुनवमा ।
खमा करो गुरु कैछ, गीरी चरोंणोंमा ।
दोष हय भरि गुरु, माफ करि दिया
च्यलकैं बियोग परि, भरि गोछ हिया ।
म्यर गोपीचंद गुरु, तुम बचैं दिया ।
मन मज गम गम, बहुत भरिया ।
च्यल भेज छिया गुरु, जालन्धर पासा ।
उपदेश लिग कोय, समझी बैं खासा ।
गुरु जालनधर ज्यूलैं, उपदेशा दिया ।
लेखी बेर घर ल्याय, मन्त्री सौंपी दिया ।
मंत्री जो बुलाई बेर, बैठ कचहरींमा ।
अर्थ मैं समझाओ कोय, गुरु उपदेशा मां ।
उल्ट अर्थ बतै बेरा, मंत्री लैं समझाय ।
मंत्री का समझण पारि, रज आई गोय ।
गुस्सा रज रज आय, पहुँच बागमा ।
गुरु जालन्धर कणा, खेतो दी कुवंमा ।
गोरखा ज्यू कौन तब, सुण मैंनावती ।
त्यर गोपीचंद आज, क्या बीगड़ी मती ।

साधू को जो हत्या कौंछ, पाप बड़ भारी ।
मनखका यूनि सारो, नरक में धारी ।
गोपीचंद भाग पारी, पाप चढ़ि होल ।
खुंद कर बूर बिल, माफो भुगतौल ।
मैं बश के सकुन माता, ये तु है आधीन ।
गुरु जालनधर क में, रहुन आधीन ।
मैंनावती रुणा लागी, गोरखा आधीना ।
साथ मैंछ गोपीचंद, माताक आधीना ।
म्यर च्यलै कणी गुरु, जरूरा बचाओ ।
दासा छु तुम्हर रोज, सेवक बनाओ ।
यक म्यर च्यल हुंय, दुसरा न ओरा ।
म्यर च्यालें कणी गुरु, बनाओ अमरा ।
गोरखा ज्यू सब सुडी, दया में अजानी ।
कोशीश करुल माता, तू घर जा कनी ।
मैंनावती च्यलै कणी, घर ल्याई गेई ।
गुरु जालनधर कणी, मूडै देख मई ।
गोरखा आर्डर करि, चेलों हाती कनी ।
अलख जगाई बेर, भिक्षा ल्याओ कनी ।
जाति पति घर तुम, अलख जगया ।
भंडार पाकड़ हवै, पैली घर अथा ।
गोरखा का चेला अब, बट लागी गया ।
गुरुक नामल सब, अलख जगामया ।
गोरख नामल सब, बभूति लगानी ।
भिक्षा सब मांगी बेर, घर हंणी आनी ।

कानिया आर्डर कनि, आपणा चलों हांती ।
मांगी बेर भिक्षा तुम, ल्याओ कोंछ थेती ।
जाँ जैल गोरखा चेला, ओती भ्रन जया ।
क्षेत्री वैष्य ब्राह्मण का, घर भ्रन पया ।
कानिपा का चेला सब, बटं लागी गया ।
रस्त में गोरख चेला, वापस आमया ।
दिया गुरु चेलों कणी, भेट है बटमा ।
भंगड है गोंय तब, दि दलों विचमा ।
गोरखना चेलोंक सब, लुटीगी खप्परा ।
रुनै रुनै चेला आनी, गुरु पास धरा ।
गुरु हैं सिक्कैत करी, लुठी गी खपरा ।
गोरखा लै सुडी बेर, तीन ताल मारा ।
कानिपा कै रिस चडी, बीन लै बजांछा ।
गोरखै जमात पारी, आग लागै आंछा ।
बीन लिय, हाथ पारी, गोरख बजानी ।
अंपड चेलों उपर, बारिष बरसानी ।
दि दिलो विचमा अब, खुब जादु मारा ।
चारों ओर हई रई, खुब हा हा कारा ।
कानिपा का चेलों पारी, सरफ जहरा ।
बेहोप हैंगई सब, हैई रै वहारा ।
कानिपा बजानी बीना, उतार जहरा ।
होंष में आजानी सब, है जानी तैयारा ।
गोरखाँ कैं मार हंणी, करनी तैयारी ।
आपडी आपडी ज्यान सब कणी प्यारी ।

गोरख अजान्नी विन, पड़ी वै अंतरा।
कानिपा की जमात में, होष न कपरा।
कानिपा की गोरख पैं, पार नि वसानी।
गोरखा तु इये कनि, बड अभिमानी।
पैंवन मंत्र मारी, उडान् असमाना।
त्यर करि द्विला कनी, अफत में ज्याना।

—गोरख नाथा का कानियाँ को—

दोहा—कहे गोरख सुन कानिया, तेरा जोगी भेषछुपादुगा।
नर से नार बनाकर तुझको, नीच घरमें व्याह दुगा
सारा अभिमान चूर्ण कर तेरा कुवारी का पुत्रा बना दुगा
गोरखा कानिया की, हंगे मार माशु।
भगदड़ मचि गेछ, हगे हा हा कार।
कानिपा का मंत्र तब, एक नि चलना।
एक जो गोरख नाथ, हजारों उतपन्ना।
तब जै कानिया कनी, सुण रे गोरखा।
सोल कला मे दिखा छै, वडे छैं मूरखा।
घर बारी त्यर गुरु, संगल दिपमां।
विन गुरु कसि भांछै, अब भंडार भां।
इक निछ बिन गुरु, भंडार खडमाँ।
संगल दिप वै गुरु, क्या तु वंगालमां।
जो गुरु कैं दैलि त्याल, उ खाल भंडार।
पछिन जो गुरु एैल, त्रिक हलि हार।
कानिपा लै गोरखा कैं, ऐसी बोली मारी।
वड चेला बनि रछै, गुरु नेम पारी।

गोरखा ज्यू तब कनी, कानियाँ हैं चातां।
त्यर बात सुणी म्यर, जलीं गोछ गाता।
म्यर गुरु हय भागी, बड खान दान।
उंच कोट बसनाम, उंच जग मान।
तेरा गुरु पीर छिया, जाकी कछैं धुना।
तब सणि गोछ ओती' चैठी कुवा डुना।
मणों विनती लिद धरी, त्यर गुरु मथ।
कया बताछैं बात ऐती, सुणौं कस रथ।
तु लिहा आपण गूरु, कुबा गाडी ऐती।
मैं ल्यान् आपण गूरु, संगल दीप वैंती।
गोरखा ज्यु तब जानी, ओती कुवा पारी।
चूटकी बभूती ओर, मंत्र दिया मारी।
कुवा मजि लिद अब, हई गो चौंगुणा।
जतुक गाढिल कौंछ, हई जाल दुणा।
येतु बात गोरखा ज्यू, कुबा में कै गया।
संगल दीप हंणी आफू, बठ लागी हया।
कानिया करनि अब, चेलों हैं आर्डरा।
कुटल फावड अब, कसाओ कमरा।
सब भण आई गया, कुबा का किनरा।
खोद मया लिद कणी, कसी बैं कमरा।
नौ डेर जो लागी गेछ, दस गुण रै गोय।
जतु लिद मथ भाय, दुण हंण मोय।
कानिया का चेलोंलैं बां, कात् कवा करी।
कया बात हगेछ कनी, मब जानी हारी।

चालिस दिन में सब थाकी गायू कनी ।
गुरु जालनधर अब कुवा में रहनी ।
गोरखे की करामत, समझीगी सबा ।
गोरखा पहुचि जानी, शहर करीवा ।
खिलाडीयाँ मिल गया, अधमा बटमा ।
गोरखा कै समझानी, हरेक बातमा ।
हर गेट पारि कनि, ठाण रौ संन्तरी ।
साधू कणी जा देखनि, ओती दिनी मारी ।
गोरख ज्यू सोची बेर, कसी जायु कनी ।
उड़ी बेर जब जानू, ये देखिला कनी ।
गोरखा कै मिल गया, रामधारी तब ।
सजि धजि बेर कनी, कां जांमछा सब ।
तब कनी रामधारी, हम जामू ओती ।
सगंलदी रजपास, मच्छन धर जती ।
नाटक कहणी जायू, पढ़ी रैछा रासा ।
रज मछनधर आज, न्यौत आर खासा ।
ईन्द्र कसी परि हई, पदमिनि राणी ।
के वातकी कमी निछ, बडी छा सयाँणी ।
समझीगी गोरखा ज्यु, मन्त्र जो यारनी ।
उनर तबलचि कणी, बिमार कै दिनी ।
रामधारी पुछ मया, गोरख ज्यु हंणी ।
तबल बज'ड कनि, की आ तुम कणी ।
गोरख तैयार हैगी, तबल बजानी ।
रामधारी सुणी बेर, खुशी हई जानी ।

दोहा--कर नाटक कहने लगे तब, सुनो मुसाफीर तुम बा॰
एक नकलची की नौकरी है अब, चलो हमारे तुम साथ
पांच रुपया तनखा महवारी, दो आना बिडी का और दूणा
खाना पिना एक साथ हमारा, बिस्तर और सब बिछाने दूणा
गोरखा तैयार हुई, भेष बदलनी ।
रासधारी साथ मज, बड लागी जानी ।
पहुचीगी सब भैणा, पचायति राजया ।
रास पढी गेछ तब, सार शहरया ।
बनि ठनी सब अया रास देख हैंणी ।
गोरखा ज्यु तबलमा, पढी गेछ रैंणी ।
दोहा--बडा रास बिसाला, शहर पर जादु डाला ।
है सारंगी साज गजब, अजीब तबले वाला ।
रज मछनधर अब, आर्डर करनी ।
आज शहरमा सब, रास हली कनी ।
सजाओ शहर कनी, करि वै रोषनी ।
चान्दी का डोरमा तब, लाल ढीन जगानी
सरकारी भंडार खोली, पाकी पकवान ।
सब खानी पीनी तब, जाकी जोछी मन ।
तैयार है गया सब, खाई पेई बेरा ।
मच्छनधर रज की छी, करम की फेरा ।
शहरक नर नारी, जम हुई गया ।
कसी हैंच रास कनी, देख हुंणी आया ।
बनि ठनि रासधारी, है गया तैयारा ।

पद्मीनी राणी बैठी, रज मच्छनधरा ।

रासधारियों का

दोहा–तानसेन की राग बजाओ, सारंगी पर झटक झटक
बिच खड़ा तबलची आता, तबले में भारी चढक चढक ।
मासूक झटक के गाते हैं, पतलि कमर मुड़ मढक मढक ।
बिच ईशक में आमीक भरते, ताली हात में पढक पढक ।

गोरख का तबलमा, नाचण भै आनी ।
तबल आवाज पारी, खुशी हैई रैनी ।
गोरख तबल मज, मृदगी बजौछा ।
जाग गुरु मच्छनधर, गोरख आगोछा ।
तबल अवाज सुडी, रज चौकी गोछा ।
गोरख क नाम ऐति, कालै लिया कौछा ।
दिल में फिकर करी, थर थर कापौंछा ।
उठी बेर सभा बिच, सबु कै देखौछा ।
तबलची है पुछ मोय, मच्छनधर नाथा ।
गोरख लै आई रछा, कि तुम्हर सांथा ।
रज मच्छनधर कणी, फिकर मनमा ।
गोरखै अवाज मिलै, सुड़ी तबलमा ।
तबलची गोरख कनी, मच्छनधर हांती ।
ऐतु दुर वै गोरखा, कांवै आल ऐती ।
तबलची गोरखा फिर, बजानि तबला ।
राग सुडो रज तब, हई जां बहाला ।
खुशी हगो रज अब, ईनाम बाटुछा ।
काकैं दिया हाति घोडा, काकै धन दिछा ।

रज मच्छनधर अब. है गोछ बहाला !
गोरखैं लै मारि दिया. उनरी मकला ।
बजाली गोरख नाथ. तबलब मन्हार ।
दीप बलै राम मानी. देव जो गंधार ।
गोरख तबल बजै, राग बद मान ।
बाप गुरु मच्छनधर, गोरख यां आब ।
फिर रब चौकी धं छ, गोरख अवाजमां ।
गोरख आमोछ कोछ. संपल दिपमां ।
आमोछ गोरख येति, अब कस हलं ।
राज सब नष्ट करी, हम भारी जाल ।
गोरख अवाज अगै, त्यर तबलमा !
सबू हैकौंधर जाओ, तु दैठ कुशीमां ।
रातिया टैमया सब, विदा हई गया ।
गोरखै खबर रज, तब पुछ गया ।
त्यर तबलमा कनि, क्या धरि रहैछा ।
गोरखै अवाज सब, यां बति अमैछा ।
तबल की पूढ करी, गोरख फोडुछा ।
अन्तर है जानी आफु, भेष छोडी हांछा ।
अंगुठी क बरोबरी, गोरख हैं गोप ।
गुरु मच्छनधर करी, नजर निआय ।
गोरख मिलनि तब, तबल भितेरा ।
गुरु चेला बात कनि, आदेश है बेरा ।
बड रूप साधू भेष, गोरख है अया ।
गोरख की माया मज, गुरु डरी गया ।

रज मछनधर तब. नाथ भेष कनी ।
गोरख का सामणी मैं. ला.बर है आनी ।
पदमनी राणी देखी. गोरखा ज्यु कणी ।
नौ मज की जोव गाणी. गोरख सैंदणी ।
गोरख के सुजा कनि. परि हंमी जमां ।
बेरि हाथ गोरखा ज्यु. धरि है सिखमा ।
गोरख कैं रीस चड़ी, चलाय मंतरा ।
सब परी बनि गया, सर जो बानरा ।
गोरख मंतर पारी. पद्मीनी हारा ।
भुलि गेछ पदमीनी. महल मन्दीरा ।
घर बार होष उनै, नि आई काकणी ।
गुरू मच्छनधर होष. उडी गे उदणी ।
मच्छनधर भाजि बेर, दौणौछ मितेरा ।
गोर ज्यु खैंचि ल्यानि,हाथ थामीभ्वारा ।
गुरु मच्छनधर कणी, गोरख समझानि ।
म्यर साथ ल्यार गुरू. किलैं छोड कनि ।
सगल दिपम गुरू. बाद गढकोटा ।
हमरी तरफ तुम. करी गया ओटा ।
पदमीनी राणी गुरु तुमूल व्यहाई ।
मकणी मारण लिखि यों हाल के रई ।
मच्छनधर डरे जानि गारख बातमां ।
क्या करि जां आज कनि, संगल दिपमा ।
गोरखा कैं समझानि, गुरू मच्छनधरा ।
तिरिया की जात हई, डिगी गौं भांखीरा ।

खर बानर सकल, ईनरी न कर।
ईजत सवाल म्यर, कुछ ख्याल धर।
गुस्स मज निरहगा, साधू हई जात्ता।
मन मज क्या धरणी, छोठी मोटी बात्ता।
जत्त सब परि छिया, जम हई ज़ानि।
गोरख हैं हाथ जोडी, खुटा लैं पड़नि।
गोरख हैं सब परि, माफी लै मांगनि।
पुकार गोरख सुडी, दया में जो आनि।
तुमकै लागोय कनि, तुम्हर गरुरा।
जीब लम्बी दांत ठुल, रहो भर-पूरा।
गुरु मच्छनधर तब, फिकर करनि।
गोरख सामडी अजि, थर थर कांपनि।
दी च्यलोक हाथ थामी, गुरु मच्छनधरा।
क्या कै जां गोरखा कनि, लागी रैछ डरा।
दि च्यलोंक हाना थायी, गोरखके सौंपनि।
यौं-छै त्यर गुरु भाई, ख्याल कर कनि।
गुरु मच्छनधर कणी, गोरख समझानि।
तुम कैं लिहणी गुरु, ऐत्ति आपू कनि।
धौलागढ़ रज ज्यूल, रचि छा भंडारा।
नौ नाथ सिद्धों जमात्त, हई रैं हाजिरा।
जालनधर चेलो साथ, मेरि तकरारा।
कानिपा दगड खास, हरैं जित्त हारा।
जो गुरु कैं पैलि ख्याल, जिरा बिकी हई।
जो गुरु पछिन आल, सदा हार रई।

कानिपाक साथ गुरु, ढाला मारि आय ।
गुरु मच्छनधर सुडी, स्वार हैं गोय ।
...ये जै गोरख कर्णा, गुरू समझानि ।
मैं देखोंला उनू कणी, तु बेफीकरल कनि ।
जो छा डर भोरा कोंछ, तौ फौज लिजोंला ।
सजि भजि तोप साथ, बनि ठनि जोंला ।
यां बै फौज लही दिनू, धौलागढ़ तका ।
मनक भरम बिक, मिठै छिला धका ।
तब जै गोरख कनि, गुरू महाराजा ।
नि चहिंन फौज तोप, और न के साजा ।
निकण गुमान गुरू, फौज व तोपोंक ।
अभिमान रहै गोय, वड वड लोगोंक ।
क्या लिणछ सांत गुरू, जां तक गोरखा ।
मन्तरों भजि करिद्विला, सबू कणी राखा ।
गुरू मच्छनधर तव, सुडिया रहया ।
गोरख करामात देखी, तब डरि गया ।
रांणीं पदमीनी भेजी, गोरखा खुदूभा ।
गुरू भाई गुरू बानी, तुम्हर साथमां ।
गोरख ज्यु हाती कनि, गुरू मच्छनधरा ।
नाक का ईनरी रवता, जसी हो उधारा ।
गोरख दया में आनि, मंतर चलानि ।
पदमीनी सकल तब, सुन्दर बनानी ।
गोरखा ज्यु तव कनि, पदमीनी हांती ।
वनमाल घमण्ड कभे, निकण कहांती ।

झन अए गुस्सा मज, धरिये ध्यानमां
साधुक बचन छाय, गुणीये मन५८
जा अब महालों मजि, कर कार बाग।
खुब कर पूजा पाठ, भगवान पग।
तब बात करि बेर, तब चमन नाथा
पेढ पिढ़ हैगे कौछ, मच्छनधर हाता
सब कनि मच्छनधर, गोरख ज्यू हणी।
गुरू भाई लिबेइ तुम, जाओ धूमू हणी।
जगलमा सैर करी, नाई धोई अया
खंडक टैममां तुम, बेर लोटी अया
गोरखा ज्यु बट लाम, गुरु भाई सांता।
किल हवे म्यार जानि, पकढी बै हाता।
गुरु भाई गोरख के, कला जो दिखानी
गोरखा में दिभणों की, पार निबसनी
गोरख की डर खाइ, चूप चाप रनि।
वापस गोरख उन, गुरु सोंपी दिनि।
चमननाथ रूड लाग, थोडी देर मजि
जंगल की याद तब, आगे कोछ आजि
गोरखके भेजि दियो हमर सांतमा।
बेर लौटी आई आंला, खंडक टैममा।
गुरु मच्छनधर कनि, सांता जा गोरखा
समा मज तंग कनि, बडे छे भूरखा
घूमी बरे आओ कोय, किल हवे म्यारा।
जब दिश छुपी जैल, लौटी अयाधरा।

गोरख ज्यू बट लाग, गुरू भाई सातमां
किन हवे भ्यार जाई, दिखाने चकमा ।
चलानि तर भोत, मारननि बसानि ।
आखीरी गोरख हांती, घर जौंला कनि ।
गोरख ज्यू घर ल्याया, गुरू कैं सौषनि ।
शिष मन मज धरि, पेट पेट रूनि ।
तब कनि आजि हम, घूमि हणी जानू ।
जंगल की सैर करी, ठंड पाणी पीनू ।
घूमडम आजी कुछ, टकी लै नि टूटी ।
जा गोरख साथ कनि, खूब लिए कुटी ।
कुवाडी यों पड़ि गई, मारियो थपडा ।
गुरुक कहण पारी, गोरख टपाडी ।
पेट कल्या खालो कोय, हकोइ भकोई ।
बार बार को करोछ, ईनरी फीराई ।
आज रात बाकी हई, भोवां बटि जौंला ।
य आफत छुटी बेर, अजाद रहोला ।
गोरखा लिगाया तब, दिया भाई कणी ।
उ दीनू की आई रैछी, ज्यान की निहुणी
गोरख लैउदिनक, पेट दिया फाडी ।
पेट सब खाली करी, अन्हण दी गाडी ।
लास लै उठाइ बेर, धारे छप मा ।
सकें मैंछ लास ओति जेठक घाममां ।
अजमेस लिखि सब, ऐतू कवा करि ।
काकड़ी न याद कुछ, मति दिया हरि ।

लास मुकी छपरमा, हंस उडी गोय
छपरमा लास छोडी, गोरखा आगोय
पकवान पाकी छिया, छतीस प्रकारा ।
तीन मर्दो खाड आगो, थाल सजे बेरा ।
तब कनि मच्छधर, गोरखा ज्यू हांती
खाँड हुंसी तीन भाई, साथ खला ऐती
थाल जो सजाई बेर, पाणी की गिलाँसा ।
पान लइ थाल भरि, सजइ छा खासा ।
तीन भाई खाओ कनि, बैठी वै भाँनमाँ
सब चिज धरिया छा, सजे वै थालमा
तब काने गोरखा ज्यू, मच्छनधर हांता ।
गुरु भाई का वै आनि, गांडी दिया आता ।
तुम्हर कहण पारी, देगि लै निकरि
पेट खाली कण पारी, उना गया मरि
धरि आय उनू कणी, सुकण धाँममा ।
कारे आनि औ खंहणी, लास छपरमा ।
मुडी वेर मच्छधर, डाढ़ जो मारुछा
कु बिज बालद ऐति, किलै आ कौछा
च्यल दिया मरि गया, राजा सब नष्टा ।
धुर है जों ते गोरखा, जनमा हो भष्टा ।
संगल दिपमा आज, के गये अन्हयार
कोख वांजि करि गोध, आज य हमर
रुनै रुनै आई गेछा, पदमीनी राँणी ।
विकराल रुप धरि, विहोव उठणी ।

उठी बेर नमी गेछ, जैछ छपरमाँ।
दिया चेलों लास कणी, धरिछा हातमाँ।
भूकि चाटि लेई बेर, डाढ़ जो मारिछ।
सबू रनवास मजा, सोक पटी गोछा।
मच्छनधर आखोंपर, आसोंकी जो धारा।
पस में जाइछी कोंछ, रोकी दिनों भरा।
या जान में सोंथ मज, फिर देखी जानि।
अस हन देखि लियन, मन जान मानि।
वियोग में मच्छन्दर विहोष है जांहा।
मच्छनधर मंत्री तब, बाँ पहुचि गाछ।
मंत्री कों गोरखा हांती, सुड रे फकीरा।
तिहखी आर्डर आलं, फासी क आखीरा।
साधू बनि हत्या केछ, तिकडी देखोंला।
फाँसीक तकतंपा री, तिकणी लटकौला।
बंगालं वै ऐति आछ, संगल दिपमा।
सजा फांसी लेखी छिया, त्यर करममाँ।
सोरे शहरमां तब, हरों उपवासा।
गोरखा ज्यू देखी रनी, सबूक कलेसा।
मत्रों में गोरखनाथ, बीन जो बजानि।
दिया गुरु भाई कणी, अवाज लगानि।
दोणी बेर आओ कौन, म्यर गुरु भाई।
थाल सजै धरि रैछ, पकै बै रसोई।
ज्योंन हंगी गुरु भाई, दौडी बेर आनि।
तीन भंवा गुरु भाई, खोहणी जो खानि।

गोरख की माया धरि, चकित है जानि ।
फूलों माला गला धरि, चना मृत्त पीनी ।
कशि वशि आय कीन, भगवान आगया ।
गोरखा चरनों मजि, सीस नवां मया ।
तब जै गोरखा कनि, सुडों गुरु म्यरा ।
म्यर सात चलों हंणी, हैजाओ त्यारा ।
निहिटना जब गुरु, के और सोचूनू ।
संभल दिपके सब, में पलटि जानू ।
बचानों की चोट गुरु, य म्यर छातिमा ।
हार जित हई रैंछ, भंडार खंडमां ।
तब कनि मच्छनधर, जरुर हिटोला ।
बटपन खर्च अब, यांवै कया लिजोंला ।
सिन्दुक वै गाडी हिला, चार खोडा हारा ।
पन्द्रह सुनक ईट, पूर तीस सेरा ।
लगी जानि बट अब, गुरू मच्छनधरा ।
गुरू भाई गोरख साथ, है गथ त्यारा ।
चार झड आई गया, शहर है भ्यारा ।
छाडी दी शहर अब, आपड बाडरा ।
दोहा—गोरख हिन्दुस्तान में आए सुन्दर तीर,
वहां एक दरख्त हौज भरे जल नीर ।
तालेमें कवल फूल खिल खिल छाये,
शीतल जल पवन नर नगर देवयान सवसीर ।
सारस हंस कुलंग किलोल करे, बड दरसरबरमें न्हाऐ ।
फिर उस दरख्त की छायामें, जा सुक कारन बिस्तर लाऐ ।

खाने को खाये तीन घन्टे सुख पाऐ,
इतने में दल लसकर पदमीनी जो आऐ।
पदमीनी जैलागीछा, गोरखा ज्यु पारी।
तिकडी खाँडकी कैछ, आई गेछ बारी।
तिकडी खहड़ी न्याय, य भुतोक दत्ता।
हम कणी ठगी न्याय, जादु जरि यत्ता।
हमर संगल दिप, के गये उजाण।
गोरख के खंड लिजि, पिस मई दाण।
गोरख के उचि निचि, बात जो सुडानि।
गुस्स में गोरख अया, मन्त्र लै मारानि।
पदमिनि राणी सुत, भुत सब मरा।
पकडि बै फेक सब, बिच समुन्दुरा।
और बाकी भुतों पारि, आग लगै दिया।
गुरू मच्छनधर रोंछ, गोरख के देखिया।
तब कैछ पदमीनि, हाथ जोडी बेरा।
मरणता मरि गेयु, करिया उधारा।
तुम्हर हातल गुरु, स्वंग में न्हया जुला।
उधार कै दिया गुरू, जसि सुख पूला।
तब जै गोरख नाथ, दया में आजानि।
दोहा में शुलोक साथ, सब समझानि।

गोरख नाथ का

हा–जो गीर गई समुन्द्र में, शीतल सारद सुभाव।
जो तट सरवर को पढी, तेज तपन तन पाव।

शीतला मंसानि दला, गधा असवारी।
रूपव चेली भव करि, पुजी नर नारी।
बुढ़ लोग पुट दिला, पुजारी रखिला।
गोरख क नाम सुडी, पुछिन नि चला।
म म्यर बचन कनि, अदृतु अपारा।
तुम्हरि य दश हई, जरभंक भरा।
गुरू चेला आई गया, ईलाक मद्गामा।
सवन्न पेड़ों छाया मुड, मन्दिर छी खासा।
ठन्डी छाया मुड वैटी, लगानि बिस्तरा।
गोरख देखानि दूर, सुन्दर सहारा।
तब कनि गोरख ज्यु, गुरू भाइयों हाति।
शहर नै भिचा मांगी, लई आओ ऐति।
बिच शहर में जाई, अलख लै जगया।
सबों घर माँगी बेर, जल्दी लौटी अया।
जोर शोर भुक लागी, करिया फिकरा।
खप्पर कै भरि बेर, लौटी अया घरा।
चार जाति बणियोंक, बनई शहरा।
गोरख का गुरू भाई, उठानि खप्परा।
झोलि धरि कन मज, बट लागि गया।
पहुँचि शहर बिच, अलख जगा गया।
जैक घर कणी जानि, सब दिनि गाई।
येसिक नि दिन भिक, के करो कमाई।
बढ अछा साधु भेष, माँगी लै खड़ीया।
तुम जस रोज आनि, ढोंग लै कंड़ीया।

गुरू भाई चमन नाथ, चूप चाप बनि ।
वापस में खालि हात, कर्मी जुला कानि ।
बणियोंक घर मजि, गाय छी मरिया ।
खेतडियां बने निमिल, गोठ छी धरिया ।
बूरि दशा देख जब, बूरि यें कुमति ।
गाय खेति हात कनि, तब साधू हाति ।
दि अना मजदूरि दिला, और पकवाना ।
खूब पिदि बेर तुम, करूला भजना ।
लाभ मजि चढि गई, यों दी गुरू भाइ ।
मरि गाय खोतो हर्णा, बढ, लागो गई ।
बैठी गे कुमति तब, बूर बस इयान ।
भुलि गया सुध बुध, बिगगा ईमान ।
गाय कर्णा खोतों बेर वापस आ गया ।
उपटिन बणियां तब, गालि दिण मया ।
दिया गुरु भाई तब, रूण पारि रनि ।
बूर काम करि बेर, फिर लै पछतानि ।
पाप चढि गोछ कनि, हमर सिरमां ।
का छुटल पाप कनि, कां नायू गगमां ।
चार जाति बणिया जो, द्वोष में आजानि ।
हलूवा जो पूरी बनै, खप्पर भरनि ।
हिटो कनि तुम कणि, पहुंचण आनु ।
तुम्हर गुरु क हम, दरशन करनू ।
सब भंड दोणी आनि, गोरख ज्यू पासा ।
गोरख क हात पारी, खप्पर दी खासा ।

खोलनि खप्पर जब, चूरी बासा देछा।
पुरीलै हलवा तब, सिकार है गोछा।
गोरखा ज्यू बदन में, चढि गो जहरा।
कसि कसि बीति कनि, आज तुम परा।
को घर मांगंड गछा, बताओ मकडी।
हिन्दु क धरम निम, ध्यान ना काकडी।
जो बात बितिया हई, बताछ चमननाथा।
गोरख कै समझानि, छिया भाई साथी।
सारी बात सुडी बेर, चढि गो जहरा।
गोरख नाथ लै तब, तीन ताल मारा।
तिरशूल कि मार करि, गुरु भाई पारी।
लासपढि जमिनमा, खून लागो धारी।
चार जाति बणियों की, नि हुडी आगेछा।
गोरख लै उन् पारि, आग लगे हाछा।
गोरखा गुरु भाई, अरज करनि।
हमर उधार गुरु, तुम कथा कनि।
बैगुना में मारि गोय, करिया बिचारा।
आपड हाथो लै गुरु, करिया उधारा।
तब जै गोरख नाथ, दया में आजानि।
गुरु भाई उधार तब, दोहा में बतानि।
दोहा—बिल फेल तुम्हारे बदन की, गति होवे प्रभात।
एक होगा सिद्ध स्याज्ञमी, एक होगा परम नाथ
तुम्हर नाम लै लोग, मंदीर बनैला।
जौ, तिल धरों सब जन पूजा करिला।

गाय मंत्र नियम हल, तुम्हर पुजमां ।
सब लोग पुजा कैंल, तुम्हर ध्यानमा ।
चार जाति बणियाँ लैं, अरज करनि ।
आग मजि हम गुरु, जलिगों कनि ।
फल मिलि गया गुरु, करनि मरा ।
आपडा हातल तुम, करिया उधारा ।
बणीयों पुकार जैछ, गोरखै कानमा ।
उद्धार गोरख कनि, आबेर दयामाँ ।

दोहा गोरख नाथः—

सिद्ध स्यालगी पारसनाथ को, पूजो तुम दिन रात ।
ईमी में उद्धार तुम्हारा, यही योग की है बात ।
मुक्ती नही होगी, कापे जो जल में रोगी ।
बार बार पुकार कहे, जनि गोरख जोगी ।
धनदौलत द्रव्य कमाओगे, न आपना मजहब उडाओगे ।
ओर देवता नही मनाओगे, ना आपना मजहब जनाओगे ।
गोरख की काया देखि, गुरु मच्छनधरा ।
दिल में फिकर करि, लागी रैछ डरा ।
च्यलोक मरणा पारि, बड दुःख होंछ ।
बियोग दिलम धरि, मन मन रोंछ ।
गोरख क साथ मज, लागि रनि वटा ।
बुलन्द पहाड अया ईरान क फाटा ।
उजाड छी चारों ओर, संगमर कुवा ।
बार पार लागि रैछ, बिच मज पुवा ।

दिया गुरु चेला तब, भोति बैठी गया।
भंग औ धतुरा घोटी, नस में रहया।
गोरख के मच्छनधर, झोली सौंपी जानि।
हुआ साई बेर अब, आलै आनू कनि।
गुरु मच्छनधर अब, गप घुमू हर्णा।
गोरख देखड लाग, गुरु झोली कर्णा।
कंचन की ईंट छिया, लाल अन मोला।
खेत सब कुवा भजा, खालि करि झोला।
नि कैरण क्यों हमुल, न करज दारा।
साधू सन्तो धन माल, जोड़ड़ बेकारा।
नीनृक बहान करि, भ्रा पसरि जानि
मछेधर गुरु तब, धुमि बेर आनि।
गोरख की नींद देखी, झोलि टटो लनि।
खलि झोली देखी बेर, आंसू आई जानि।
उठी वे गोरख नाथ, सुडों गुरु कौंछा।
तुम्हर सिरक भारा, कम करि हौंछा।
तब कनि मच्छंधर, बूर हई गोछा।
क्या लिजानू भंडार माँ, मंरण है गोछा।
कंगल आगोछ कैला, हात हिलै बेरा।
तुल करि दि गोरखा, महणी अधेरा।
सब सुडि गोरखा ज्यू, ठाड उटा जानि,
बुलंद पहाड में जो, पिसाब कै बहानि।
मंत्र मारि पहाड़मा, नुनक बनाय।
गिर मिरु पर्वत सब, कंचन है आय।

तब ने गोरख जू, मच्छनधर हांती।
उन गुरु माया सब, झोली भरि बैती।
चाहे बना चुडिया तु, या बना थांगुखा।
सुनक का उल बना, सुनक जो कुडला।
सुनक खां रव्ट भात, सुन खा हलुवा।
रचि ले भंडार अब, पाकि गया पूरा।
सब देखि मच्छनधर, कांप थरा थरा।
बडि शक्ती देखी कौछ, ते गोरख परा।
गिर मिरु पर्वत कौछ, गोरखा ज्यू हाना।
मैं कंचन हवेर गुरु, है जालि कुमता।
दूर दुर लोग ऐल, धाक धरि बेरा।
क्वे लिजाल मन भरि, क्वे लिजाल सेरा।
कुछ दिन बाद गुरु, हई जूला खालि।
मकडी बचाओ गुरु, ईज्जत जो गेलि।

गोरख नाथ

दोहा-गिर मिरु को गुरु गोरख ने जो, दिया मंत्र का ढोर।
पढ़ जल भारा मन्त्र से ओ, कर दिया जो असल बिलौर।
कचन सम सब जो नुर तेरा, ले जाय चाहे जो मो चूरा।
घटे चेड़ कभी न रति भर, रहेगा जो अब पूरे का पूरा।
गुरु चेला वट लाग, अधिन जो अया।
कलकता शहर मजि, प्रवेश है गया।
काली माई मन्दिर, मैं म्यल जोर सोरा।
रेति कौला उधर कनि, मन्दिर क ओरा।

हात जोडी अराधन, काली माई हर्णा ।
भूक तिस आई गोय, त्यर द्वार कर्णा ।
काली माई अराधन, सब लोग कनि ।
सिर काटि काटि बेर, भेट जो चढानि ।
लासों की वॉ डेर हरें, खून गंगा धारा ।
काली माई जै हो माई, कनि जै जै कारा ।
गोरख जो देखि बेर, सोच में पढनि ।
अन्याय या हर कनि, मन्दीर में जानि ।
काली माई तब कैछ, सुण रे गोरखा ।
बिन भेंट किलै आछै, बडे छै मूरखा ।
ब्रह्म राज महादेव, बड बड देवा ।
नौ नाथ चौरासी सिद्ध, मेरि कनि सेवा ।
य सब ईलाक त्यर, भेट जो दिजानि ।
सिर काटी काटी बेर, खून में चड़ानि ।
तु आछै यां खालि हात, बड़ अभिमानि ।
काली माई हाति तब, गोरख ज्यु कनि ।
मांगी मांगी हम खान, भेट क्या चढ़ान ।
जोगी हई जात माता, काँ वै भेट ल्यान ।
दुना गौरी देवी देखी, और देवी अम्बिका ।
आषा देवी मनसा देवी, देखी जो चंडिका ।
और देखी नन्दा देवी, सबू में सयानि ।
मानिल की देवी देखी, बडि दया दानि ।
हाथ जोडी ईनों हणी, खुशी हई जानि ।
एक देवी तु देखिछै, जो बडि असगूनि ।

तब कैंछ कालि माई, गोरख ज्यु हाति ।
ते जम हजार आनि,अभिमानि जो थेत्ति ।
तिपारि चलानू कैंछ, आपड त्रिसूला ।
कलेजि खादेर त्यर, खून पिजौंला ।
तब कनि गोरखा ज्यू, हात्त जोड़ी बेरा ।
काट मेरि गरधन तु,तिकै छा अखत्यारा ।
या खाजा कल्यज म्यर, या पिजा खूना ।
ठडीया छौं छाति खोलिय, पत्थर आधिना ।
मखी बनि कालि माई, तिल बरा बरि ।
घुसिगे गोरख पेट, जो कलेजि पारि ।
गोरखा ज्यु चुपचाप, भजन मैस कनि ।
पैटक भितेर तब, आग लगै दिनि ।
काली माई पेट मज, जलंण भैगेछा ।
सब द्वार बन्द हई, भ्यार कसि थेंछा ।
गोरखै आधीन ऊनी, धार नि बसाई ।
कालि माई करतूत्त, फेल जो है गई ।
आखीरमें कालि माई,माफी लै मांगीछा ।
तेरि जित्त है गोरखा, मैं हारिगी कैंछा ।

दोहा—हे सतगुरु मैं जल गई, जल्दी मुझे सम्भाल ।
ईस जलत्ति हुई आग से, दिजो बहार निकाल ॥
मालूम हुआ गोरखनाथ कलाधारी,
जान लिया त्रिलोकी से कुन्यारी ।
कुल कुदरत्त पै कुर्बानि गई,
तेरे योगभ्यास पर बलिहारी ॥

तब अै गोरख कनि, कालि माई हाति ।
सुण मेरि बातों कणी, ध्यान धरि चित्ति ।
अन्याय के रौछ कनि, तुल य जगमा ।
आंख बन्द हरै त्यर, आई घमंडमा ।
अणीं जणी लोगों कणी, तू तंग करिछै ।
हरेक लोगोंक पेचि, सिर कट बैछ ।
बडि पापी देबी छै तु, सुणि ले आखिरा ।
मैं तीन बचन दिजा, हात मारि बेरा ।
बचन दिबेर फिर, बचन निभालि ।
बचनों खंडन करि, फिर विसि हैलि ।
मुणि जएं आज बति, आदीभ की बलि ।
फूल पाति धूप बति, ईमैं खुशी रलि ।
कालि माई गोरखै की, बात मानि गेछा ।
बचन दिबेर तब, मन्जूर छा कैछा ।
गोरख त्यार हैगी, दया में आवेरा ।
कालि गाडी हैच, नासिक क द्वारा ।
दोहा—आओ अब तुम भवन बिराजो,
छत्र सुवरण को सिर साजो ।
चार खूट के बिच में दुरगे,
ईन्द्र समान अब तुम गाजो ।।
कालि माई गोरख का, बचन मथहै गेछा।
गोरख का कालि माई, चरण छुगीछा ।
कालि माई तब जैछ, मन्दिर भितेरा ।
मानि गेछ सब बात, बचन दिबेरा ।

ओमणी वे छुटि हय, आदिन की बलि ।
कालि माई गोरखक, आधिन रहैलि ।
गुरु चेला बट लाग, कलकत है आधीन ।
समुन्द्र पार करि, कसोली पहाड छीन ।
गोरख ज्यु मच्छनधर, अय धारो धारा ।
सतलुज व्यास नदी, पहुचि गो किनरा ।
गुरु चेला नदी मजा, असनान करनि ।
कालि नाथले ऐति, शिव दर्शन क करनि ।

दोहा—जहां पड़े भवर में ज्वालाके, जोगी नाद शब्द गाए
वहां कालीनाथ कलेश्वरने, शिवशंकरके दर्शन पाऐ
धन धन लाटों वाली, देख दिल की है खुशाली
गूंद गूंद फूल हार जो, तब लाता है मालो

ज्वाला जी का

दोहा—जगत जोत ज्वालामुखी, अटल राज दरबार ।
गुरु गोरख को देखिये, प्रत्यक्ष रूप लिया धार ।
गुरु गोरख व जगत अम्बे की, आपसमें जै हरनाम हुई ।
जगदम्बे चन्दन चरस रही, जोगी नाद शब्द घर नांद हुई
बोलत हैं तब जय जयकारा, सो सुनत होता निस्तारा ।
चलो गुरुदेव खाना खाओ, त्यार हुआ है भंडारा ।

गोरखनाथ का

दोहा—माताजी हम आये रसोई खाय के,
तुम मत करो फिकर हमारी ।
हमें कशम दिदार की ओर तुम,
अम्बे दुर्गे आदि कुमारी ।

मैं जोगी तेरा दास हु, तू महा ज्वाला पटरानी ।
हम निर्धन गुण जोगी हैं, तू शक्ति आदि भवानी ।
हम हैं गदा सेलानि, तु जो स्थिर महारानी ।
शक्ति रूप का नहीं खपत, हमें अन्न और पानी ।

ज्वाला मुखी तब कैंछ, सुडो गुरु बाता ।
नराज हैगछा तुम, की हमर सांता ।
भंडार खंइम गुरु, मना किलै कौंछा ।
मान्स मछी हेवर तुम, परहेज करौंछा ।

जस तुम खला गुरु, विस पकै दिला ।
एक हवै एक मल, खनसाम कै बुलौला ।
तब कनि मच्छनघर, सुड माता बाता ।
पांणिक दिबिया भरि, दे हमर हाता ।

चुल मजि आग जलै, करिये त्यारा ।
हम जानू घूम हणी, बंगाल शहरा ।
तौं लै भंडार रच, ओती जाई आनू ।
जतुक छा भिक्षा सब, जम करि आनू ।

दोहा—जब तक हम आते नहीं,जोत आग न बुझने पाय
राजा हिंगलाज नैपाल तलक, जोआ पंतग को लाया ।

तब कैंछ ज्वाला मुखी, गोरखा ज्यु हांती ।
बेफिकर जाओ तुम, लौटी अया येती ।
आग नि बूझिड पाव, तुम अण तक ।
तुम्हर रहौंल गुरु, बचनों क बाधक ।

चाहै हो बारिस भोत, चाहे चल पौंन ।
हेर लौटी अया गुरु, य म्यर बचन ।

डिबिया दि हाच अब, गोरखै हातमां ।
गोरख डिबिया दिनि गुरु क हातमा ।
ज्वाला मूखी आग जलौं, पांखि जो खौलों छा ।
डिबिया भितेर पाणी, बीसाट पाणों छा ।
गुरु मच्छनधर तब, चकित है जानि ।
य बिन आगक पाणी, कसी खौल कानि ।
गोरखे माया छा कनि, मन में सोचनि ।
चूर चाप डरि मरा, बट लागी रैनि ।
गुरु चेला आई गया, मुलक कन्धारा ।
बुलन्द पहाड़ अया, बीस कोस पारा ।
चारों ओर ठण्डी धार, बरफ जमीछा ।
आराम या कौल कनि, बिस्तर लगाछा ।

दोहा-शीतय जल से गोरख न्हाये, सूरज से ध्यान लगाये
नजर किरन से ज्योति नेत्र, नहीं हटने जो न पाये

सुरज का

दोहा—सुरत सब लेखा समझ के, सोच किया सम्मान ।
कड़ी सर्दी पहाड पर, मेरा घर रहा जो ध्यान ।
सूरज अजमेंस कनि, गोरख ज्यु जपमा ।
किरणों प्रकाश धरि, सोल कला तपमा ।
बरफ पिघलि गोछ धामक तपलै ।
पहाड़ जलणांर मया, तेज गामलै ।
गोरख का जप मज, फरक नि हय ।
शितलै की धार जैसी ठन्ड मानि मय ।

दोहा–कितना दुख डालो, चाहे अगनी में डालो।
है तुमको अख्त्यार चाहे मारो या डालो।

सूरज का

दोहा–तुम पूरे सिद्ध हो गये, जगत में तुम सा औरन कोय।
अब तुम शिवशंकर के माफिक, में अटल सिद्ध जो होय।
मेरी सोलकला तपन जो, तुम ने सब सिर पर लीनी।
तु सोलकला संमपूर्ण जोगी, आ आठ कला में भी दीनी।
सूरज है गोरख ज्यु, प्रणाम करनी।
खुशी में वारिष तब, अमृत बरषानी।
पैलि करि दुशमनि, बाद मब प्यारा।
गुरु चेला बट लाग, है जानि त्यारा।
पहाड़ आपस मज, लड़णी में गया।
गोरख ज्यू हाँतो कनि, तुम का जमया।
भषम है गोय गूरू, तुम दीन पछिना।
हमर उद्धार गूरु, क्या हल आधीना
तब जै गोरख कनि, औं पहाड़ो हाँती।
पत्थर पहाड़ तुम, जमिया छा येती।
न तुम्हर मोल तोल, न कुछ ध्यानमा।
पाव छटाँड सेर जला, तोलि यै तराजूमा।
दोहा–बीच गहर अमीर अतर जो, पानी सेज्योति बूंदपटे।
अजन से चशम माशूकों के, तो, पसन्द कर अब, मन चढ़े।
लगायगी नारी, बालम, गुरु बचन सूर्मा कंधारी।
मच्छनधर देखीं फेर, हैरान है जानी।
उस्तादों उस्ताद अब, गोरख छा कनी।

बावन बलिहारी ह्वो, कृष्ण अवतारी ।
विपन महेश, ह्वो, बड़ तप धारी ।
दिया गुरु चेला तब, बाट लागी गया ।
राज्य में जो धौलगढ़, प्रवेश है गया ।
बीन नाद बजै ढाल, अंतालिस शब्दमा ।
राम शिव धुन गाई, सारै शहरमा ।
शहरक नर नारी, खुशी हई गया ।
गुरु कैं लिवेर कनि, गोरख आ गया ।
गोरखक गुरु भाई, खुशी हई जानी ।
उज्याव हड्म तब, बीन जो बजानी ।
मैंनावति गोपी चन्द, आ-पहुच-उदणी ।
पहुचिगी सब लोग, उन मिलों ह्वणी ।
मैंनावति हात जोडी, सिर लै झुकैंछा ।
कुशल खबर तब, गोरख लै पूछौंछा ।
तब कैछ मैनावति, गोरखा ज्यू हाती ।
तुम्हारी छाया छ गुरु, खुशी रया ऐती ।
गोपी चन्द कणी गूरू, उतारिया पारा ।
मनमें बहुत हई, च्यलकी फिकरा ।
गुरु जालन्धर ह्वै, बचाओ ईकणी ।
सौंपि जानू गोपी चंद, अब तुम कणी ।

गोरख नाथ—मैनावती से

दोहा—फिकर रहा महादेव को भसमासूर अनुसार ।
फिकर हुआ भगवान को, दस बार लिया अवतार ।
फिकर हुआ श्रीराम को, महारावण थल में धाया ।
फिकर रहा श्रीकृष्ण को, कंश से डेरा दूर पाया ।।

गोरख ज्यू कनि तब, कानिया है बाता ।
खुशी हया गुरू त्यर, खुशी जोग जमाता ।
तब कनि कनिया ज्यू, दया छ तुम्हरी ।
खुशी हया सब झंड, जमात हमरी ।
तुम्हर दर्शन हई, पाप कटि गया ।
जो कुछ तकरार हई, खता माफ कया ।
तब कनि गोरख ज्यू, कानिया है बाता ।
म्यर गुरु कोसों दूर, त्यर गुरु सांता ।
तेरी हई जीत कनि, मेरी हई हारा ।
गुरु कुवा निकालि-वै, खै हाच भंडारा ।
यां बति संगलदीप, गुरु लिण गोय ।
भोत दिनों रहा पर, कोसों मील होय ।
त्यर तकरार हवै, पछिन रहया ।
कानिया गोरख कणी, हाल लगा मया ।
गुरु रहै गई कौंछ, कुवा क मितेरा ।
मरिया छै ज्योंन जांणी, कुछ न खबरा ।
लाखों मजदूर लगै, नि बसाई पारा ।
दुणा दुणी लीद जम, हई गेछ हारा ।
तब कनि गोरख ज्यू, सुंड रे कानिया ।
में गुरु लिहणी गोय, जो संगल दीपा ।
गुरु कणी सांत त्याय, भंडार बिचमां ।
तू किलै निल्याय गुरु, नि आई शरमां ।
तब कनि कनिया ज्यू, हाथ जोड़ी बेरा ।
गोरख ज्यू तुम हया, पुरुष औतारा ।

तुम्हरी है जित गुरु, मेरि हई हारा ।
आज बति में रहोल, सागिर्द तुम्हरा ।
दोहा–राजाँनै जोगी मारदिया, अन्नपूरण भेष पालो तुम ।
कुवेसे पीर जलनधरको, करकृपा बहारनिकालो तुम ।
मैंनावती कैछ गुरु, मेरि सुणि लियो ।
कानिपाकी खता कणी, माफ करि दियो ।
नाथोंक छा नाथ तुम, पिरों का छा पीरा ।
सार जोग जमातम तुम, बड सब सीरा ।
कुवा बैती गाडी दियो, गुरु जालनधरा ।
ख्याल करि दिया गूरू, गोपीचन्द्र ओरा ।
मैंनावती आँखों पर, आँसों आई गया ।
तब जै गोरखनाथ, दया में आ गया ।
गोरख थामनि तब, गोपी चन्द हाता ।
जमात लिबेर जानि, कानिया के साता ।
कुवा कणी सब भैणा, जम हई जानी ।
सुण रे कानिपा तब, गोरख ज्यू कनी ।
त्यर गुरु दबिया छा, य कुवा भितेरा ।
कावति य लीद गाड़, खालि लगै ढेरा ।
सारी बात कानिया जो, गोरख के लगानी ।
लाखों मन लिद गाड़, दुण हगो कनी ।
क्या बात है गेछ-कनी, समझ नि आनी ।
हम तंग हगों गुरु, दया करो कनी ।
सुंड माता मैंनावती, गोरख ज्यू कनी ।
गोपीचन्दसकलकि येति, तीन तसवीर चढ़ीनी ।

राजहन्सी पोशाक मज, हात हो तलवारा ।
अबेर निहंग चैनि, बुला कारीगरा ।
तसबीर बनि बेर, ल्याश्रो कुवा कणी ।
मैंनावती आर्डर दिछ, कारीगर हंणी ।
तब कोंछ कारीगर, हंजूर हांजीरा ।
मेरि लायक सेवा कोंछ, बताओ आखीरा ।
तब कोंछ मैंनावती, सुंण कारीगरा ।
गोपीचन्द सकलकि तीन, बनैं ल्या तसबीरा ।
सकल नकल सब, हंणी चैंछा ऐका ।
हात परा तलवार, पूरी हो पोसाका ।
कारीगर जांछ तब, तसबीर बनाछा ।
तीन तसबीर बणैं, तैयार कैं ल्यांछा ।
गोरखै आधीन, तीन तसबीरा धरा ।
देखी बै गोरख तब, मारनी मंतरा ।
आपस में तसबीर, बातचीत कनी ।
अलख अलख करी, अलख जो रटैंनी ।
जमौंतम सब लोग, चकित रै गया ।
डर लागी कानिपाके, चूप चाप रया ।
तब जैं गोरख कनि, सुण रे कानिपा ।
कुवा बै निकाल गुरु, भुगतमें यां पापा ।
कानिया ज्यू तब कनि, मैं क्या कैसकून ।
गुरू चाहे मरि जाओ, मैंत केनि कनू ।
गोरख चुटकी मारी, मंत्र जो मारनी ।
तीन बार धूमि बरो, चौंफेर जो लगानी ।

बभूत जो मारी दिया, लीद भरी कुवमां ।
टीडी दल बनि बेरा, उड़ जो अकाशयाँ ।
सात रंग धार छुटा, लैन लगे बेरा ।
छै गए असमान मज, कै हाच अधेरा ।
ओभणी वै पैंद हया, सौवा येती तवा ।
गोरख की माया सुणी, चकित हैं सबा ।

टिंडों का गोरख को

दोहा—हे सत गुरु हम क्या करें, कौन देश को उड़ जांय ।
हम को दो बतलाय, गुरु कौन २ बनसपति खाँय ।

गोरख टीडों को

दोहा—एक वार हर साल में, फीरना नम्बर वार ।
डाल मूल फल पात का, करना तूम अहार ।
दो दिन बाद कही तीसरे पहर, कभी भी नही ठहरना ।
फल फूल फली अन का दाना, मुख में न पाना ।
आकर करना ठिकाना, भूक में मिट्टी खाना ।
रहो बैठ नौ मांस कुवे में, फिर जगल चढ़ जाना ।
ईस्वर की माया देखी, गोरखै हातमां ।
सुड़ी वै चकित हला, गोरखै बातमां ।
कानिया जमांत सब, देखिया रै गई ।
गोरख आधीन काकी, नि चलड़ पाई ।

गोरख का पूतलों को

दोहा—सुन माया के पूतले, तूझे देता हुँ उपदेश ।
ईस कुवे के बीच में, रहें जोगी जो दुरवेश ।
तैनात कुवे पर करता हुँ, बात समझ दिल पर लाना ।

दिल दहसत न खाके, गुरु जलनधर आदेश करना।
कोई बात उलटा पूछे, तो बन के चुप हो जाना।
जो कहे फकीर तुम्हें, बात उसकी सह लेना।

तब कनि ओ पूतला, जालनधर हाती।
दरशन करण गुरु, आज अरों येती।
नौ नाथोंक नाथ हया, योग जुगराजा।
आदेश आदेश गुरु, सुड़ियाँ अरजा।

जलनधर गुरु तब, उन्हें हैं पुछनी।
क्या काम लिजिया तुम, येति अछा कनी।
पाँच तत्तों पुतलोक, बयछ दरकारा।
बयछ त्यर पत पाँणी, के कीछ पूकारा।

दोहा—पीर जलनधर मांनियो, गोरख का आदेश।
कुवे के ऊपर खड़ा, वह गोपी चन्द नरेश।
गोपीचन्द नरेशवही जो, जोग उपदेशको आयाथा।
उपदेश को समझ न पाया मंत्री से फरमाया था।
उल्टा अर्थ बताय मंत्री ने, राजा रोष में छा गया।
ज्ञानीसे निरंज्ञानी हुवा, लड़काईपन में भूल गया।
आपसीतल पानीअमृत बानी,जाकेमुख निकसेवानी।

गुरु जालनधर तब, गुस्सा में आ जानी।
गोपीचन्द राज त्यर, नष्ट हजों कनी।
बिधवा है जैल कनि, सोल सौ राखियाँ।
जनर प्यारक भर, स्वामी छें बनिया।

गोपीचन्द हजो कनी, आँखीर भपमा।
कर्म भजन आओ कनि, मंनख दुनियाँ।

तब कनि गोरख ज्यु, जालनधर हांती ।
राजा गोपीचन्द्र गुरु, मरि गोंछ येती ।
अर्थ जो निआय गुरु, मंत्रीयों कणी ।
माता मैंनावती तब, समझाय उकणी ।
समझी वै रज तब, पछिन पछताय ।
तुम्हर तरफ बति, गममें रहय ।

पूतला

दोहा—असल राजा सकल की, नकल बनि खूश रंग ।
चाह चढ़ चरचा करे, चहाता हुँ सतसंग ।
तुम जैसे महापूरुष को, बार बार आदेश ।
पड़े हैं चाण तुम्हारे, कहें आदेश आदेश ।
दुख भंजन गुरु कृपा, मान आदेश हमारी ।

जालनधर

दोहा—कौन भूप है कूप पर, अद्भूत रूप का अनूप ।
नमस्कार बार बार करे, सुन्दर बंचन स्वरूप ।
दुरवेशों से क्या मतलब, बेकार क्यों सताता है ।
एक गया दूसरा खड़ा, आदेश आदेश पुकारता है ।

गोरखनाथ

दोहा—गुरुजी गोपीचन्द मरने का, जग रचा तिरास ।
सोक पड़ा रनवास जो, ईन्द्र हुए उदास ।
बिलफेल ईन्द्र चढ़ा आया, पल में अमृत लाया ।
परियों ने गोपीचन्द भसमीं में, अमृत व बरसाया ।
ईन्द्र ने दी ज्यान, आप दो अमृत प्याला ।
तब गुरु जालनधर, गुस्से में आ जानी ।
जोगी कंणी मारी वेर, बंचल कां कनी ।

गोपीचन्द भसम हजो, शरीर कनचना ।
नि हव मिटल कनि, य म्यर वचना ।
गोरख ज्यु तव कनी, गुरु जालनधरा ।
गोपीचन्द जलि गोय, वरण शरीरा ।
सोल सौ रानियां विका, विधवा है गया ।
गम खाई माता वीकी, विहाल है रया ।

तीसरे पूतले का

दोहा—एक वचन दो वचन, दिया गोपीचन्द मार ।
अब तुम तीसरे वचन, लिजों तन निसतार ।
नौ नाथ चौरासी सिद्ध के, सीर से आदेश ।
अदाब अर्ज गोपीचन्द की, गुरु महाराज आदेश ।
हम गुन्हगार वेकारों को, माफ कर निस्तारो ।
बड़ा कसुर हमारो, आगे खड़ा तुम्हारो ।
तब जै पूछनि अब, जालनधर नाँथा ।
आदेश आदेश वाल, कोछ कुवा मथा ।
कनि वरि आई रछै, वयछ त्यर नामा ।
माला में जपनि देत, वयछू खास कामा ।
तव जै गोरख कनी, जालनधर हाती ।
गोपीचन्द रनवास, शोक भारी जैची ।
सोल सौ जो रानियोल, सोक कर भारी ।
शिवजी जों पारवती अया, उई टैय पारी ।
शंकर भगवान तव, दया में आ गया ।
राजा गोपीचन्द कंग, ज्योन वरी गया ।

जालन्धर का

दोहा—रुद्र ईन्द्र दोनों हैं, जगत बीच भगवान।
मेरी गुरु उदय नाथ की, मिटती नहीं गुमान।
सत्तगुरुशक्ती मेरी भक्ती, हो जावे उसका सिर भषम।
लहु मांस रुप स्वास, पेट शरीर भषम।
एक दो तीन भषम, गोपीचन्द तस्वीर भषम।
तब जै गोरख कनी जालनधर हांती।
गजब कै दिया गुरु, तुमुल जो येती।
शंकर बचन सब, मिटी मिलै दिया।
साधू रंचा तुम गुरु, यनि कंण छिया।
आज तक यस गुरु, आधीन नि हय।
जल रूपी गंगा मजि, अनरथ है गोय।
गोरख है बात, कनि गुरु जालनधरा।
रजै लै में कुवां खेत, वगैर कसूरा।
न बीक खंडम छिया, नत बीगडमां।
माला जपी बैठी छिया, बाग किनरमां।
गोरख ज्यू समझानी, जालनधर करणी।
गोपीचन्द सारी बात, लगानी कहाणी।
उल्ट अर्थ रज करणी, मन्त्री लै समझाय।
मन्त्री क समझण पारी, रज आई गोय।
गल्ती करी बेर गुरु, रज पछताछा।
बाल पना मजा येसी, अक्ल कां हैंछा।

जलनधर नाथ का सराफ

दोहा—जिस मंत्री ने बुरी देई, नहीं भूगेत सूख चैन।

खाक खलक की छानता, भटकेगा दिन रैना।
दिन तीस में बरबाद होय, दर २ धक्का खावेगा।
हो उत मुलक बामद में, गल २कर मर जावेगा।
पावे न मुक्ती भूत हो डरावे, किचड से मल २नहावे

गोरखनाथ गोपीचन्द को

तब कनी गोरख ज्यु, गोपीचन्द हुंणी।
तेरि बारी आगे कनी, अब ता ईदणी।
यत बार पार हलि, या हुणी निहुणी।
आखीर छा दाव अब, अज मेंम कणी।
सारी बात रहै तेरी, तकदीर परा।
या हलै भष्म येती, या हलै अभरा।
सुंणी बेर मेंनावती, आंसू आई गया।
सब भंण देखी बेर, फिकर कमया।
मेंनावती च्यलै कणी, गल में लगैंछा।
भूकी चाटी लेईबेर, मन मन रुवैंछा।
गोरखा ज्यु तब कनी, मेंनावती हाती।
आखीर छा दाव पेच, देखी लिनों येती।
मैंनावती आंखों पारी, आँसों कीछ धारा।
च्यलक बियोग मजि, पड़ी छा गम्भीरा।
च्यल के पोसाग पैर, तैयार करिछा।
सूशबू छीडकाई बेर, मनमज रुवैंछा।

गोरख नाथ जालनधर को

दोहा—गोपीचन्द चाह पर खड़ा, तजे ज्यान की आसा।
करे चौफेरे सोवती सिद्ध, गुरु गोरख के पासा।

गम फिकर बेचारे की, दुख भजन आदेश २।
बेग्यात मनूप जाहल तुम, बिन गमखार आदेश २।

जलनधर का गोरख को

दोहा–सिद्ध गोरख कौन है, देता खड़ा अवाज।
हमको सादत मन्द करे, आप बने महताज।
रस भरी जवाँ बोल रहे, माठे नृप नमाने से।
क्या गुप्त लुप्त कहता है, अमृत बैन मचाने से।
कीस मतलब आदेश करी, हम जोगी जमाने से।
रे आदम आ भाग तु, आया है कोन ठिकाने से।

गोरखा जालनधर को—

दोहा–गुरु तीन बार परलों कीया, पद मैंना का पूत।
अब रक्षा कर गये, सब जोगी अदभूत।
सोल सौ रांड बिठा दीनी, गोपीचन्द जो मारदिया
जग शोक कराय आपने, बीच अन्धुरा डार दिया
सब सिद्धों ने कृपा कर, दरगाह अर्ज गुजार दिया
श्री नारायण हुकम हुआ, गोपीचन्द उभार दिया
तब कनी जलनधर, गोरख ज्यु हाँती।
सन्तोक न कनी, पलट न रती।
ब्रह्मा बिषनु ईन्द्र ज्युक बचन छै दुरा।
जो म्यर बचन हनी, अटल छै भर पूरा।
सिद्धों मजि सिद्ध हय, पीरों मजी पीरा।
नाथों में नौ नाथ हय, भेष में फकीरा।

गोपीचन्दा बनि जाल, अमर शरीरा।
य म्यर बचन छुट, अटल भ पूरा।
ब़ां तक अकाश, हय, जमीनक हांथा।
अमर छा गोपीचन्द, जनम का सांथा।
गुरुक बचन सुडी, खुशी हई गया।
गोरख ज्यू खुशी मज, फूलि नि समया।
जालनधर हाथ थामी, कुवा बै निकाला।
रथ में विठाई बेर, है रया बहाला।
कानिपा जो आई बेर, चवर फूकानि।
गोरख ज्यू कानिपा कैं, देखिया रहनी।
मैंनावति सुडी बेर, खुशी हई जैछा।
गोपीचन्द हात पारी, थाल सजै दिछा।
रतन जडिया हया, थालक किनरा।
चन्दन अक्षत सब, भरी भर पूरा।

मैंनावती का सुत्र सन्देश

दोहा–धन२ गोरखनाथ तुम्हें, धन पीर जालनधर नाथ।
गोपीचन्द का कर दिया, अमर जगत में गाथ।
धन मच्छनधर नाथ आऐ, हरली विपत हमारी।
धन सारी जोग जमात, आ समझी खिदमतगारी।
मेरा गम मिट गया पूत्र से, गुरु की है मेहरबानी।
गोरख चरन की दासी हु मैं, बहुत करीकुरबानी।
राजा गोपीचन्दसाधू बना, शरीर कागममिटानेको।
गोपीचन्द कोमजबूरकिया था, अमरशरीरबनानेको।
इससे आगे दूसरे भाग में देखिये